संस्थापित १८६७ ई.

आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

आजीवन शुल्क ₹ १०००
वार्षिक शुल्क ₹ १००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) एक प्रति ₹ २.००

● वर्ष : १२१ ● अंक : ०५ ● ०२ फरवरी, २०१६ माघ कृ० नवमी, सम्वत् २०७२ ● दयानन्दाब्द १६१ वेद व मानव सृष्टि सम्वत् : १६६०८५३११६

आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. की अन्तरंग एवं साधारण सभा का अधिवेशन सम्पन्न

दिनांक-31 जनवरी,2016 रविवार को आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, लखनऊ की अन्तरंग सभा का साधारण अधिवेशन एवं साधारण सभा का अधिवेशन आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, नारायण स्वामी भवन, 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ में सभा प्रधान-श्री देवेन्द्रपाल वर्मा जी की अध्यक्षता में शान्ति पूर्वक सम्पन्न हुआ। प्रातः 8 बजे से यज्ञशाला में राष्ट्रकल्याण यज्ञ सभा मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती के संरक्षण में आचार्य वेद व्रत अवस्थी के आचार्यत्व में सम्पन्न हुआ जिसके यजमान सभा प्रधान श्री देवेन्द्रपाल वर्मा बने। प्रदेश के सभी अन्चलों से पधारे आर्य प्रतिनिधि नर-नारियों ने यज्ञ में भाग लेकर अपनी आहुतियां समर्पित की। यज्ञ समाप्ति पर संक्षिप्त उद्बोधन सभा प्रधान जी ने दिया। इसके बाद ध्वजारोहण सम्पन्न हुआ। तत्पश्चात साधारण सभा का अधिवेशन आरम्भ हुआ। ईश प्रार्थना के उपरान्त दिवंगत आत्माओं के प्रति दो मिनट का शोक श्रद्धांजलि अर्पित की गई तथा विश्व विख्यात वैदिक धर्म को समर्पित मूर्धन्य संयासी आचार्य बलदेव जी के निधन पर प्रदेश के सभी जनपदों से उपस्थित पदाधिकारियों, अन्तरंग सदस्यों, विद्वानों ने सदन में आचार्य बलदेव जी के दिनचर्या एवं जीवनी पर प्रकाश डालते हुए अपनी भावभीनी श्रद्धांजली अर्पित की तत्पश्चात् सदन को बीच में स्थगित कर भोजनावकाश कर दिया गया।

भोजनावकाश बाद पुनः अन्तरंग सभा एवं साधारण सभा की बैठक सम्पन्न हुई, जिसमें सभा प्रधान एवं सभा मन्त्री ने पदाधिकारियों, अन्तरंग सदस्यों, विभिन्न आर्य समाजों एवं जिला सभाओं से उपस्थित प्रतिनिधियों को सम्बोधित किया, जिसमें गत कार्यवाही की पुष्टि, वार्षिक आय-व्यय एवं आगामी अनुमानित व्यय बजट भी पारित किया गया।

उपर्युक्त के अतिरिक्त आगामी वर्ष-2016-17 में वैदिक धर्म के प्रचार को आन्दोलन के रूप में चलाने के लिए रूप-रेखा तैयार करने एवं पूर्वांचल आर्य महासम्मेलन अयोध्या के बाद बुन्देलखण्ड में प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन करने के उपरान्त एक विशाल प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन प्रदेश की राजधानी लखनऊ में करने का प्रस्ताव पास किया गया।

सभा प्रधान श्री देवेन्द्रपाल वर्मा ने अपने उद्बोधन में कहा कि प्रदेश में कार्यरत् सभी आर्य समाजों के पदाधिकारी एवं सदस्य पूर्वान्चल आर्य महासम्मेलन, अयोध्या जो गुरूकुल महाविद्यालय अयोध्या, फैजाबाद के प्राचार्य-आचार्य श्री नागेन्द्र कुमार शास्त्री एवं श्री विमल किशोर आर्य के संयोजकत्व में आयोजित है। इस सम्मेलन में सभी समाजें अधिक से अधिक संख्या में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करें तथा झण्डा, बैंनर, पोस्टर, पाम्प्लेट सभी आर्य समाजें अपनी-अपनी ओर से छपवायें एवं अपने-अपने क्षेत्र में लगवायें, जिससे सम्मेलन का प्रचार-प्रसार अधिक से अधिक हो सके। इस सम्मेलन में अनेकों अतिविशिष्ट, विशिष्ट राजनेता एवं आर्य नेताओं को आमंत्रित किया गया है।

सभा प्रधान ने सदन को यह भी सूचित किया कि "वैदिक धर्म सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता" के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान करने के लिए दयानन्द बाल विद्या मन्दिर बड़ौत, बागपत के प्रांगण में दिनांक-12 फरवरी,2016 को प्रातः 10.00 बजे से विशाल कार्यक्रम का आयोजन किया गया है, जिसमें अनेकों अतिविशिष्ट, विशिष्ट राजनेता एवं आर्य नेताओं को आमंत्रित किया गया है। आगामी बुन्देलखण्ड एवं लखनऊ में आयोजित होने वाले आर्य महासम्मेलनों के लिए अभी से गॉव, ब्लाक, तहसील एवं जिले स्तर पर प्रचार-प्रसार करना प्रारम्भ कर दें।

सभा मन्त्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती ने भी सदन को सम्बोधित करते हुए अपना उद्बोधन सदन में पढ़कर सुनाया तथा सभा कोषाध्यक्ष एवं अन्तरंग सभा के सभी पदाधिकारी एवं अन्तरंग सदस्यों ने भी अपने-अपने विचार एवं सुझाव प्रस्तुत किये।

एजेण्डे में विषयगत प्रस्तुत किये गये सभी प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किये गये तथा मा0 सभा प्रधान जी की आज्ञा से जो भी प्रस्ताव सदन में प्रस्तुत किये गये अन्य विषय में सर्वसम्मति से पारित किये गये, जैसे गरीबों को सहायता देना, बाढ़ पीड़ितों, सूखाग्रस्त, ठंड से पीड़ितों को कम्बल वितरित किये जाने आदि का प्रस्ताव भी सर्वसम्मति से पारित किये गये

सार्वदिशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली के प्रधान एवं गुरुकुल कालवा के संचालक आचार्य बल्देव जी के निधन पर श्रद्धांजलि सभा

आर्य जगत के तपोनिष्ठ शान्ति की प्रतिमूर्ति गुरूकुल परम्परा के संवाहन दृढ़व्रती हरियाणा में ऋषि दयानन्द के प्रति घोर विषवमन करने वाले रामपाल जैसे दुर्जन को जेल में बन्द कराने व उसके गर्हित आश्रम को बन्द कराने में अग्रिम आन्दोलन के प्रणेता आचार्य बल्देव जी की दिनांक 28.1.2016 को दयानन्द मठ रोहतक में दिवंगत हो जाने के कारण शोक श्रद्धांजलि सभा के रूप में सम्पन्न हुआ। जिसमें श्री देवेन्द्रपाल वर्मा सभा प्रधान जी श्रद्धांजलि देते हुये कहा कि आचार्य बल्देव जी सरकारी सेवा को आचार्य धनवान देव जी, स्वामी ओमानन्द जी के सान्निध्य में आकर गुरूकुल झज्झर आये और उसी के हो गये सरकारी सेवा छोड़कर स्वाध्याय ब्रह्मध्याय से विशिष्ट विद्वान व योगचित्त हो गये। उन्होंने गौसेवा का संकल्प लेकर गौशाला की स्थापनाकी जहां कई हजार गाय हैं। उनके सानिन्ध्य में ब्रज राज सिंह आचार्य प्रद्युम्न बाबा राम देव आचार्य बालकृष्ण, आचार्य आर्य नरेश प्रभूति अनेकों विभूतियां तैयार हुयी जो सारे देश में, क्षेत्रा में सम्मान कार्यरत हैं। आप इनके दृढ़ प्रति थे। हरियाणा में सन्तराम पाल नामक व्यक्ति ने अपना आश्रम खोलकर अपने हजारों शिष्य बना कर महर्षि दयानन्द के विरूद्ध विष घोल रहा था स्वामी जी ने सरोष, सबल विरोध का आन्दोलन चलाया और उसे जेल में डालकर उसके आश्रम बन्द करा कर ही शान्त हुये।

अन्तराष्ट्रीय आर्य महा सम्मेलन की तैयारी के लिए ब्रह्मचारी राज सिंह के साथ आर्य प्रतिनिधि सभा भवन, लखनऊ में आकर ठहरे मेरे साथ प्रदेश के लखनऊ, झांसी, देवरिया, इलाहाबाद, आगरा, बिजनौर आदि सभी मण्डलों में घूम घूम कर देहली में आर्य महासम्मेलन आयोजित करने का प्रचार किया। उक्त सम्मेलन में कई लाख आर्य नर-नारियों ने भाग लेकर सफल बनाया। वे धुन के पक्के दृढ़व्रती एवं सिद्धान्त निष्ठ सौम्य स्वभाव के सन्यासी थे। उनके निधन से आर्य जगत की अपूरर्णीय क्षति हुयी है। हम सभी आर्य जन उस क्षति की पूर्ति हेतु, समर्पित भाव से आर्यसमाज के प्रचार प्रसार में लग जायें। इसके पश्चात सभा मंत्री स्वामी धर्मेश्वरा नन्द सरस्वती, डॉ धीरज सिंह कोषाध्यक्ष, श्री वीरेन्द्र रत्नम, श्रीमती गिरजा त्रिपाठी उप मंत्री सभा, देवरिया श्री राम पाल सिंह एडवोकेट मेरठ, श्री अभय श्रोत्रीय मुरादाबाद, श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य बुलन्दशहर, श्री महावीर सिंह पत्राकार मथुरा, श्री अरूण आर्य मुसाफिर खाना अमेठी, डॉ वी.पी. सागर इलाहाबाद, डॉ. भानु प्रकाश आर्य लखनऊ, श्री रणवीर सिंह आर्य सीतापुर, श्री प्रकाश नारायण शास्त्री वाराणसी, श्री नागेन्द्र सिंह मिर्जापुर, श्री शिवकुमार कौशल गोण्डा, श्री पंकज जायसवाल इलाहाबाद, श्री रामेन्द्रदेव बहराइच, श्री नवीन चन्द्र भवाली, नैनीताल, संजय तिवारी बलरामपुर, आनन्द चौधरी लखनऊ डॉ. राम नारायण बाराबंकी, श्री शिवपाल सिंह मुजफ्फर नगर, श्री यशपाल आर्य शामली, आचार्य रामज्ञानी देवरिया, श्री शिवचरन भटनी, श्री महेन्द्र आर्य मौनपुरी ब्रह्मचारी पूरन सिंह अलीगढ़, श्री रामचन्द्र सिंह यादव फरूखाबाद, श्री धर्मवीर आर्य बागपत, रविशास्त्री बड़ौत श्री कड़कदेव, ब्रह्मचारी बुलन्दशहर, जय प्रकाश भारती गाजीपुर, अशोक आर्य पिलखुआ, श्री वीरेन्द्र सिंह आर्य अनूप शहर श्रीमती गायत्री दीक्षित शाहजहांपुर, आचार्य तेजपाल आर्य अमरोहा, ओमपाल अमरोहा, डॉ. बी.डी. शुक्ला, श्री उमेश कुमार वर्मा एडवोकेट हरदोई, श्री श्याम प्रकाश शास्त्री कानपुर, श्री देव सिंह आर्य झांसी, बिलावर सिंह, श्री विजेन्द्र सिंह, बिजनौर, श्री राज सिंह भदौरिया फतेहपुर, श्री राम प्रकाश सरन, कृष्ण

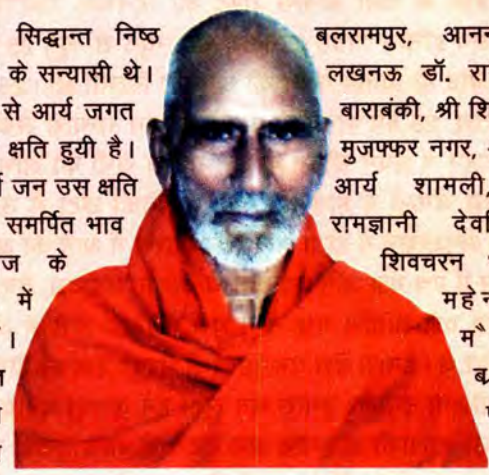

शेष पृष्ठ.....८

आचार्य बल्देव जी के देहावसान से आर्य समाज की अपूर्णीय क्षति

आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. में कार्यालय में शोक श्रद्धांजलि सभा

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के प्रधान गुरूकुल कालवा के संचालक, हरयाणा गौशाला संघ के अध्यक्ष गुरूकुल झज्जर के संरक्षक, श्रीमद्दयानन्द आर्ष विद्यापीठ के कुलपति आचार्य बलदेव जी के दि. 28.1.16 को अचानक देहावसान की सूचना से आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. लखनऊ कार्यालय में शोक सभा का आयोजन किया गया। सभा प्रधान श्री देवेन्द्रपाल वर्मा, सभा मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, सभा कोषाध्यक्ष-डॉ. धीरज सिंह, सम्पादक- आचार्य वेदव्रत अवस्थी तथा सभा के अधिकारी एवं कर्मचारियों ने शोक संवेदना व्यक्त की है। आर्य मित्र परिवार आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. उनके प्रति अपनी हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, मंत्री
आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र.

देवेन्द्रपाल वर्मा
प्रधान/संरक्षक

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री/प्रधान सम्पादक

आचार्य वेदव्रत अवस्थी
सम्पादक

सम्पादकीय.....

घर घर को खुशहाल रखने के लिए पंच महायज्ञ अनिवार्य

आज हमारे परिवारों में विघटन अलगाव विलगाव की भावना सामान्य सी होती जा रही है वृद्धों का संरक्षण सही ढंग से नहीं हो पा रहा। बहुत से वृद्धों को वृद्धाश्रम में आश्रय लेना पड़ताहै। सभी लोग अपने अपने को खुशहाल बनाने की आपाधापी में लगे हैं। घरों में बूढ़ों की उपेक्षा उनके तिरस्कार की खबरें आती रहती हैं। घरों में आपसी विवादों में अनेक की हत्यायें तक हो जाती हैं इस सब पर कुछ समय तक चर्चायें भी चलती है परन्तु फिर भी समस्याओं का निदान नहीं हो रहा है। इस पर सभी को चिन्तन करने की आवश्यकता है।

प्राचीन युग का जो भी इतिहास उपलब्ध है उसमें ऐसा नहीं था सभी की परवरिश व संरक्षा बिना व्यवधान होती थी। समाज में आश्रम व्यवस्था अनिवार्य थी, वैदिक शिक्षा पद्धति-विद्यालय लड़की लड़कों के आवासीय होते थे जहां चौबीस घण्टे की दिनचर्या निर्धारित होती थी ब्रह्मचर्य पालन इन्द्रिय निग्रह अनिवार्य था। न्यून से न्यून 25 वर्ष तक पूर्ण ब्रह्मचर्य के बाद ही विवाह करने की अनुमति मिलती थी। 25 वर्ष ब्रह्मचर्य 25 वर्ष गृहस्थ, 25 वर्ष वानप्रस्थ उसके पश्चात सन्यास लेकर परिवाजक बनकर जनजन में अपने जीवन के अनुभवों से सभी को लाभान्वित कराते थे। विद्यालय जंगलों में होते थे। जहां प्रकृतिकी छटा में उनका विकास गुरूत्रनों के अनुशासन में होता था। फिर गृहस्थ में आने का अधिकार होता था। घर घर में पंच यज्ञ अनिवार्य होते थे, अर्थात् ब्रह्मयज्ञ, देव यज्ञ पितृयज्ञ बलिवैश्व देव यज्ञ अतिथि यज्ञ सभी घरों में नित्य होते थे और सभी घर खुशहाल होते थे। हमारा देश धन-धान्य से भरपूर देखकर विदेशी लुटेरों ने लूटने की योजना बनाकर हमारा धन लूटा हमें कंगाल बनाया फिर अंग्रेज लुटेरों ने बड़ी चालाकी से हमारा धन लूटने के साथ हमारी संस्कृति नष्ट करने का उपक्रम आरम्भ किया हमारी शिक्षा पद्धति बदल डाली। हमें रोजी रोटी कमाने मात्र की शिक्षा देनी आरम्भ की। फलतः हम निष्क्रिय और अकर्मण्य से होते गये। धन अधिकाधिक पाने की लालसा बढ़ने लगी। पंच यज्ञों की व्यवस्था डगमगा गयी। वेद ज्ञान का अभाव हुआ। ढोंग पाखण्ड बढ़ने लगे। मातृशक्ति शोषित होने लगी हम पंगु होने लगे।

प्रभु की कृपा से ऐसे विकराल काल में महर्षि दयानन्द सरस्वती का प्रादुर्भाव हुआ। उन्होंने देश की दुरवस्था पर गम्भीर चिन्तन किया। दुरवस्था का कारण पराधीनता को जाना। पराधीनता के मूल में वेद ज्ञान का अभाव तथा कथित धर्म गुरूओं का पाखण्ड मातृशक्ति का पददलन पाया और इस दुर्दशा से छुड़ाने व बचाने के लिए उन्होंने आर्य समाज की स्थापना की। वेद की ओर लौटने का संदेश दिया। आर्य समाज संगठन ऊर्जा से चला सभी विकार ढहने लगे। स्वाधीनता आन्दोलन चला जिस आन्दोलन में सर्वाधिक आर्य नर-नारियों ने भाग लेकर देश को स्वतंत्र कराया। अपनी सरकार बनी अपना संविधान बना जिसमें महर्षि दयानन्द के सभी सिद्धान्त नियम के रूप में समाहित किये गये।

हमारी सरकार ने एकांगी भौतिक समृद्धि पर ध्यान केन्द्रित किया शिक्षा व्यवस्था नहीं बदली, हमें बर्बाद करने वाली ही शिक्षा चालू रखी। फलतः हमारा चरित्र निर्माण रूक गया। पढ़ाई की डिग्री पाने तक सीमित हो गयी। आज सर्वत्र अशान्ति वैर विरोध बढ़ना सामान्य बात हो गयी है। महर्षि ने राष्ट्र निर्माण के लिए आर्य समाज की स्थापना की थी प्रत्येक आर्य को इस पर गम्भीर चिन्तन की आवश्यकता है और देश को सुखी समृद्ध बनाने के लिए आर्य समाज के सिद्धान्तों का जन जन में प्रसार करने के लिए संकल्प लेना होगा। आर्य समाज संगठन को संगठित करना होगा। जन चेतना जगानी होगी। जब हम एक ईश्वर की आराधना का संकल्प लेकर अपने जीवन में पांचो यज्ञ ब्रह्मयज्ञ अर्थात् ईश्वर की स्तुति उपासना प्रार्थना (देव यज्ञ अर्थात् नित्य अग्निहोत्र) पितृयज्ञ अर्थात् परिवार के बड़े बुजुर्गों की सेवा सत्कार और सम्मान सभी प्राणियों की रक्षा का प्रयास अतिथि यज्ञ अर्थात् विद्वानों का सत्कार उनके ज्ञान से अपने जीवन में ज्ञानार्जन की अभिलाषा।

निश्चय ही जब हम सभी आर्य समर्पण भाव से अपने घरों में जीवन में इन पांचों यज्ञों को समाहित करने का व्रत लेकर जीवन जियेंगे तो घर घर में पंच यज्ञ विकसित होंगे फिर हमारी अवस्था संहलेगी अपने देश अपने परिवार के बड़े बुजुर्गो की सेवा जीव मात्र की रक्षा का भाव जगेगा। भाई भाई पास पड़ोसी में प्यार का संचार होगा और हमारा समाज और देश सुखी समृद्ध होगा और विश्व का मार्ग दर्शक बनेगा। -सम्पादक

ईश्वराधीन कर्म-फल व तद् आश्रित सुख-दुःख व्यवस्था पर विचार

मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।

संसार में मनुष्य ही नहीं अपितु समस्त जड़-चेतन जगत क्रियाशील हैं। सृष्टि पंचभौतिक पदार्थो से बनी है जिसकी ईकाई सूक्ष्म परमाणु है। यह परमाणु सत्व, रज व तम गुणों का संघात है। इन्हीं परमाणुओं से अणु और अणुओं से मिलकर त्रिगुणात्मक प्रकृति व सृष्टि का अस्तित्व विद्यमान है। परमाणु में इलेक्ट्रान कण भी निरन्तर गति करते रहते हैं। सृष्टि की उत्पत्ति से भी पूर्व निर्मित इन परमाणुओं में इलेक्ट्रान ईश्वरीय नियमों के अनुसार गति करते आ रहे हैं एवं प्रलय अवस्था तक यह क्रम निरन्तर चलता रहेगा। मनुष्य व सभी प्राणियों में प्राणों का बाहर आना व अन्दर जाना निरन्तर होता रहता है। पलकें भी निरन्तर झपकती रहती हैं। जागृत अवस्था में मनुष्य का मन भी निरन्तर क्रियाशील रहता है। मन आत्मा से प्रेरणा लेता है और ज्ञान व कर्मेन्द्रियों को कर्मो में प्रवृत्त करता है। उठना-बैठना, चलना-फिरना, सोना-जागना, शौच जाना, भोजन करना, मल-मूत्र का त्याग आदि भी क्रियायें एवं कर्म हैं जो जीवित रहने के लिए आवश्यक हैं। इनसे भिन्न किसी विषय का चिन्तन वा विचार, तदनुसार शरीर को उसके अनुसार प्रवृत्त कर इच्छित परिणाम प्राप्त करना आदि भी सभी मनुष्य करते हैं। हमारे यह सभी कर्म हमारी शारीरिक, बौद्धिक, सामाजिक व आत्मिक उन्नति का आधार होते हैं। हमारे अनेक कार्यो वा क्रियाओं का प्रभाव पर्यावरण-परिवेश-वातावरण व दूसरे मनुष्यों पर भी पड़ता है। इसी प्रकार से दूसरे मनुष्यों व प्राणियों के कर्मो वा क्रियाओं का प्रभाव भी हम पर पड़ता है। अन्य कर्मो का यदि विभाजन व वर्गीकरण किया जाये तो मुख्यतः यह शुभ व अशुभ कर्म कहे जा सकते हैं। हमारे जिन कर्मो से हमें लाभ होता है परन्तु दूसरे निर्दोष प्राणियों वा मनुष्यों को किसी प्रकार से हानि नहीं पहुंचती, उन्हें शुभ कर्म कहा जा सकता है और इसके विपरीत कर्मो को अशुभ कहा जा सकता है। कर्म-फल व्यवस्था से सम्बन्धित एक शास्त्रीय वचन है ' अवश्यमेव हि भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभं। अर्थात मनुष्य को अपने किये हुए शुभ व अशुभ कर्मो के फल भोगने ही होते हैं।

कर्मफल व्यवस्था के सन्दर्भ में सृष्टि की उत्पत्ति के प्रयोजन को जानना भी महत्वपूर्ण है। सृष्टि की उत्पत्ति क्यों हुई ?इसका उत्तर चारों वेदों एवं समस्त वैदिक व अवैदिक साहित्य के मर्मज्ञ महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश में दिया है। सत्यार्थप्रकाश के अष्टम् समुल्लास में वह ऋग्वेद के एक मन्त्र 'इयं विसृष्टिर्यत आ बभूव यदि वा दधे यदि वा न। यो अस्याध्यक्षः परमे व्योमन्त्सो अंग वेद यदि वा न वेद।। प्रस्तुत कर इसका अर्थ करते हुए लिखते हैं कि जिस से यह विविध सृष्टि प्रकाशित हुई है, जो धारण और प्रलयकर्ता है, जो इस जगत् का स्वामी है, जिस सर्वत्र व्यापक सत्ता में यह सब जगत् उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय को प्राप्त होता है, सो परमात्मा है। उसको, हे मनुष्य ! तू जान और दूसरे किसी को सृष्टिकर्ता मत मान। इस मंत्र में ईश्वर की सत्ता तथा उसके सृष्टि उत्पन्न करने के कार्य को बताया गया है। ईश्वर व सृष्टि के अस्तित्व को जान लेने के बाद प्रश्न होता है कि ईश्वर ने यह सृष्टि क्यों व किस प्रयोजन के लिए बनाई है ?सृष्टि को देखकर ईश्वर का अपना कोई निजी प्रयोजन विदित नहीं होता। हम संसार में उद्योगों को देखते हैं जहां विविध वस्तुओं का निर्माण होता है जिसे उद्योगपति दूसरे लोगों के उपयोग व धन कमाने के लिए करता है। उद्योगपति मनुष्य है अतः उसका प्रयोजन धन कमाना है। व इससे अन्यों का हित भी जुड़ा है परन्तु ईश्वर मनुष्य नहीं है, वह धन व ऐसे किसी कार्य के लिए सृष्टि की रचना व पालन आदि कार्य नहीं करता। उसे किसी से किसी पदार्थ की अपेक्षा भी नहीं है। हां, जीवों को सुख व दुःख का मिलना इसका प्रयोजन प्रतीत होता है। ऋग्वेद के मंत्र द्वसुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परि षस्वजाते। तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्त्यनश्नन्नन्यो अभि चाकशीति। के शब्दों तयोरन्यः व स्वाद्वत्ति में कहा गया है कि (तयोरन्यः) इस संसार में जीव व ब्रह्म में से एक जो जीव है वह इस वृक्ष रूप संसार में पापपुण्यरूप फलों को (स्वाद्वित्त) अच्छे प्रकार भोक्ता है। यहां कहा गया है। कि जीवात्मा अपने शुभ व अशुभ जो पुण्य व पाप कर्म कहे जाते हैं उनके फलों अर्थात् सुख व दुःख रूपी भोगों को भोक्ता अर्थात् उनका परिणाम व फल को पाता व ग्रहण करता है। वेद अर्थात् ईश्वरीय ज्ञान के आधार पर ज्ञात होता है कि ईश्वर ने इस सृष्टि को जीवों के पाप व पुण्यरूपी कर्मो के फलों को प्रदान करने के लिए ही अपनी सामथ्य से मूल-कारण प्रकृति के द्वारा इस सृष्टि की रचना की है। श्वेताश्वरोपनिषद् के श्लोक 'अजामेकां लोहितशुक्लकृष्णां बह्मवीः प्रजाः सृजमानां सरूपाः। अजो हयेको जुषमाणोऽनुशते जहात्येनां भुक्तभोगामजोऽन्यः।। में कहा गया है कि इस अनादि प्रकृति से निर्मित सृष्टि का भोग करता हुआ अनादि जीवात्मा उसमें फंसता है। फंसने का तात्पर्य है कि जीवात्मा सृष्टि में फलों व सुख की कामना से कर्म करता हुआ इसमें फंसता है अर्थात् ईश्वर के कर्म-फल व्यवस्था में बंधता है। यदि इसे उलट दिया जाये तो इसका अर्थ होता कि यदि जीव संसार में सुख आदि भोगों की इच्छा से रहित होकर ईश्वरोपासना व परोपकारादि कर्मो को करता है तो वह बन्धनों में फंसता नहीं अपितु मुक्त हो जाता है।

उपर्युक्त द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया मन्त्र में ईश्वर, जीव व प्रकृति के अस्तित्व को अनादि बताया गया है। यह तीनों पदार्थ वा सत्तायें अनादि काल से विद्यमान हैं। ईश्वर को उपादान कारण प्रकृति से सृष्टि की रचना करने व इसे चलाने का ज्ञान स्वाभाविक रूप से अनादि काल से है। जीवों को मनुष्य या प्राणियों के शरीर चाहियें तभी वह अपनी ज्ञान व कर्म स्वभाव वाली सत्ता का उपयोग अर्थात् पूर्व कर्मो का भोग व नये कर्मो को कर सकते हैं। यदि सृष्टि न हो तो उनका अस्तित्व निरर्थक सिद्ध होता है। यदि ईश्वर सृष्टि बनाने की सामर्थ्य रखता है, वह सृष्टि की रचना न करे तो उसका अस्तित्व होना उपयोगी नहीं और उसका ईश्वरत्व वा स्वामीत्व भी किसी काम का नहीं। इसी प्रकार से प्रकृति से यदि सृष्टि न रची जाये तो इसका अस्तित्व भी निरर्थक ही सिद्ध होता है। अतः जीवों को अपने अपने प्रारब्ध का भोग और नये कर्मो को करने के लिए ईश्वर द्वारा उपादान कारण प्रकृति का उपयोग कर सृष्टि की रचना करना आवश्यक है। ईश्वर कुछ जीवों को

शेष पृष्ठ.....५

गुरूकुलीय परम्परा के संवाहक– आचार्य बलदेव जी महाराज–अमर रहें।

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा
उ.प्र., लखनऊ।

आज से ५० वर्ष पूर्व गुरूकुल झज्जर की स्वर्ण जयन्ती पर वर्ष १९६६ के फरवरी मास में मुझे सर्वप्रथम इनके दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था उस समय मेरी आयु मात्र १३ वर्ष थी लेकिन मुझे सब दृश्य उपस्थित हैं युवा सम्मेलन मुझे अधिक याद है व्यायाम प्रदर्शन का भी पूरा चित्र चिन्त में सुरक्षित है पूज्य स्वमी ओमानन्द जी उस समय आचार्य भगवान देव जी के रूप से प्रसिद्ध थे तब आपने ब्र० बलदेव जी और ब्र० इन्द्रदेव जी (इन्द्रवेजश जी) की भूरि-भूरि प्रशंसा की थी। स्वामी समर्पणानन्द जी (पं० बुद्धदेव विद्यालंकार) ने आचार्य जी की प्रशंसा करते हुए उन्हें अपना आशीर्वाद दिया था तभी से पूरे देश में आर्य जगत में ब्र० बलदेव जी आचार्य की प्रशंसा रूपी यश का विस्तार हुआ था उसी के ४ मास बाद गुरूकुल झज्जर में १५ दिन व्यायाम सीखने के माध्यम से रहने का सौभाग्य मिला था और उसके पश्चात् कुछ समय तक पढ़ने का भी सौभाग्य मिला है १९६८ में जब में पढ़ने के लिए गुरूकुल झज्जर में आया था उस समय आचार्य बलदेव जी ही प्रधानाचार्य के रूप में प्रतिष्ठित थे आपकी कर्मठता - तपस्या - शालीनता - सौम्यता विद्वत्ता के आगे सभी नतमस्तक रहते थे। अन्न संग्रह का कार्य गुरूकुलों के लिए सबसे कठिन परीक्षा होती है आचार्य बलदेव के लिए यह सर्वोत्तम कार्य के रूप में सिद्ध हुआ आपने पिछल वर्षो की अपेक्षा दो गुनी गेहूँ संग्रह करके पूज्य आचार्य जी के मुख से भी प्रशंसा कराने का आपको सौभाग्य मिला। आप मितभाषी विद्वान के रूप में प्रसिद्ध हुए अष्टाध्यामी व्याकरण महाभाष्य जैसा कठिन ग्रन्थ आपको सरल रूप से पढ़ाने का अभ्यास हो गया था उसका मूल कारण था हमारे पूज्यपाद गुरूकुल सिरसागंज मैनपुरी के आचार्य गुरूदेव महात्मा देवस्वामी जी महाराज, आप उन्हीं के चरणों में बैठकर विद्वान् बनें वे गुरूकुल एटा के आचार्य जी से पढ़कर इस योग्य बने कि व्याकरण का शिक्षा और महाभाष्य को सरलता तरीके से शिष्यों को पढ़ाया करते थे वहां २ वर्ष तक आचार्य जी ने व्याकरण का अध्ययन किया गुरूकुल झज्जर में आकर उसका परिमार्जन किया और स्वामी विवेक आनन्द जी गुरूकुल प्रभात आश्रम मेरठ जैसे योगी तपस्वी साधुओं को भी आपने विद्वान बनाया। आपसे एक बार में पढ़कर छात्र सन्तुष्ट हो जाया करते थे। मेरे ऊपर आपका स्नेह और आशीर्वाद सदैव रहा आप संकल्प के धनी थे गुरूकुल झज्जर से गुरूकुल कालवा तक की यात्रा भी संघर्ष - संकल्प और तपस्या तथा पुरुषार्थ से भरा इतिहास है जो सदैव आने वाली पीढ़ी को प्रेरणा प्रदान करता रहेगा। गुरूकुल कालवा में भ्राता वेदपाल जी का तप पुकार रहा था और आप आचार्य हरिदेव जी (स्वामी प्रणवानन्द जी) योगेन्द्र पुरूषार्थी (दिव्यानन्द जी) विक्रमकुमार विवेकी।

आदि-२ साथी एवं शिष्यों के साथ कालवा आये थे। और अपने तप से पूरे क्षेत्रवासियों की श्रद्धा के केन्द्र बिन्दु बने थे। गोरक्षा के लिए आपका संघर्ष पूरे आर्य जगत् को याद है सुन्दर गौशाला निर्माण हेतु तत्कालीन मंत्री श्रीमती मेनका गांधी जी ने आपको अपूर्व सहयोग प्रदान किया था उसके पश्चात् आप आर्य समाज की राजनीति में भी सक्रिय हुए आपने अपने गुरूकुल में बढ़े छात्रों का ही प्रवेश निश्चित किया था साथ ही ऐसे छात्रों को प्रविष्ट किया गया जो ब्रह्मचर्य से सीधे सन्यासी अथवा साधक बनकर समाज सेवा का व्रत लेगें जैसे म० बुद्ध के समय में भिक्षुओं का दीक्षित किया जाता था उसी प्रकार का स्वप्न आपने देखा और उसे साकार करने का पुरूषार्थ किया जिसका परिणाम स्वामी रामदेव जी आ० बालकृष्ण जी, आ० नरेश जी , आ० राजेन्द्र जी, स्वामीधर्म देव जी, स्वामी महेश योगी जी जैसी बड़ी श्रृंखला है जो आज पूरे आर्य जगत् में सेवारत होकर आचार्य जी की वंश परम्परा को बढ़ा रहे हैं। आचार्य बलदेव जी एक मिशनरी के रूप में विख्यात हुए अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की परम्परा आपकी अध्यक्षता में प्रारम्भ हुई ब्र० राजसिंह आचार्य भी आप द्वारा ही दीक्षित शिष्य रहे हैं उनसे मिलकर पूरे भारत का भ्रमण किया कलकत्ता में आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल के कार्यालय भवन का उद्घाटन किया प्रत्येक प्रदेश में प्रतिनिधिसभाओं का निर्माण एवं संचालन किया अन्य देशों में भी आर्य महासम्मेलनों का आयोजन आपके कार्यकाल में ही हुआ है आपने दिल्ली में दो बार तथा प्रान्तीयस्तर पर भी आपने संगठन को सुदृढ़ किया। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधिसभा के अध्यक्ष पद की शोभा आपने बढ़ाई। सन्त रामपाल सिंह ने जब हरयाणा में आश्रम बनाकर महर्षि दयानन्द सरस्वती और आर्य समाज के विरूद्ध विषवमन शुरू किया तब आपने उसके विरोध में जनमानस को तैया किया और आन्दोलन किया सड़कें जाम की उसका परिणाम हुआ कि उसे गिरफ्तार किया गया आज वह जेल की हवा खा रहा है यह आचार्य जी तपस्या के कारण ही सम्भव हो सका है। इसी प्रकार गोरक्षा के लिए आपने संघर्ष किया सत्याग्रह किया और बूचड़ खाने तुडवाये। गोरक्षा दल बनाया, हरयाणा गौशाला संघ के आप अध्यक्ष बने और पूरे प्रदेश की गौशालाओं के लिए सरकार से अनुदान तथा सहायता दिलवाई। महर्षि दयानन्द सरस्वती की प्रतिमा बुढ़ाना मु० नगर (उ०प्र०) चौक बनवाकर उसका अनावरण किया। आपके तप और त्याग के आगे सभी नतमस्तक रहते थे। एक समय था जब ब्र० बलदेव ब्र० इन्द्रदेव, (इन्द्रवेश) जी की जोड़ी युवकों के लिए हृदय सम्राट के रूप में याद की जाती थी फिर राजनीति और धर्मनीति पृथक्-पृथक् अथवा वर्चस्व बनाने लगी और एक समय-समय जब आचार्य बलदेव जी भी आर्य समाज की राजनीति के पुरोध बनकर शिरोमणि सभा के अध्यक्ष पद पर शोभायमान रहे। उधर ब्र० इन्द्रदेव जी सन्यासी बने और राजनीति में सांसद बनें पर आर्य समाज की राजनीति में उनकी तपस्या कुछ कम रह गयी और अध्यक्ष पद पर जाते-जाते मुक्तवस्था को प्राप्त हो गए। ज्ञान और तप का संघर्ष चलता आया है सदैव तपस्या की ही विजय हुई है। आचार्य जी तपोमूर्त्ति थे, वेद-व्याकरण के विद्वान थे साधक और योगी थे। उनके विषय में आज पूरा आर्य जगत् सुपरिचित है गुरूकुलीय परम्परा के वे संवाहक थे जहाँ भी गुरूकुल होता वहीं जाते और ब्रह्मचारियों को प्रेरणा प्रदान करते थे। गुरूकुल सिरसागंज के प्रथम स्नातक थे गुरूकुल झज्जर के प्रथम आचार्य थे फिर तो पूरे देश में आप गुरूकुलीय परम्परा संचालित करने के लिए नैष्ठिक दीक्षा देकर आचार्य तैयार करते थे। उनका सपना था कि प्रत्येक गुरूकुल में आचार्य ब्र० अथवा सन्यासी हो तपस्वी हो तभी ''अग्निना अग्निः समिध्यते'' अपनी ज्ञानाग्नि से प्रदीप्त कर सकते हैं। आपने पूज्यपाद गुरूदेव म० देवस्वामी जी और पूज्य स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती के स्वप्न को साकार किया है। गुरूकुल झज्जर आज भी आपके आशीर्वाद से अपने उद्देश्य पूर्त्ति हेतु प्रयासरत है उसकी शताब्दी मार्च में हो रही है। इसे भी विडम्बना ही कहा जायेगा कि मात्र एक डेढ़ मास पूर्व ही आप हमें छोड़कर चले गए क्या ही अच्छा होता यदि आपका हमें शताब्दी पर आशीर्वाद मिल पाता इसे प्रभु इच्छा बलीयनि कहकर ही सन्तोष करना पड़ेगा। आचार्य बलदेव जी हरयाणा के लिए एक वरदान बनकर आये थे। आपकी एक आवाज पर हजारों लोग सहज मात्र से एकत्रित हो जाया करते थे एक बार स्वामी ओमानन्द जी महाराज ने स्वयं ही कहा था कि आचार्य बलदेव जी की तपस्या मेरे से ऊपर है। ''सच्चेगुरू के सच्चे पारखी'' पुस्तक में आपकी दीक्षा का पूरा विवरण आता है उस समय का दृश्य ही बड़ा मनोरम है यज्ञशाला में सात्विक वातावरण है गुरूकुल में आप जब किसी कार्य से आये थे (शायद बिजली विभाग में आप कार्यरत थे) उस सात्विक वातावरण से आप इतने प्रभावित हुए थे कि आपने अपने जीवन की धारा को ही बदल दिया था गृहस्थ आश्रम छोड़कर ब्रह्मचर्य की साधना को अपनाया था और दूसरे साथियों को स्वामी जी की प्रेरणा से तैयार किया था। तभी से आपका प्रयास आर्य समाज के कार्य को सुदृढ़ कर रहा था गतवर्ष आपका स्वास्थ्य कमजोर हो गया था तब आपके दर्शनों के लिए स्वामी प्रणवानन्द जी के साथ दिल्ली अस्पताल गया था और आपसे आशीर्वाद लिया था फिर गुरूकुल झज्जर के सम्मेलन पर मिला था सोच रहा था कि शताब्दी पर जाकर फिर दर्शन करूँगा। लेकिन आज प्रातः की सूचना ने सभी कुलवासियों को शोकाकुल कर दिया। शान्ति यज्ञ किया और सभी ने मौन रहकर अपनी श्रद्धाजंली प्रदान की। मैं आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० लखनऊ एवं गुरूकुल पूठ- गुरूकुल ततारपुर की ओर गुरूकुल सिरसामंज की ओर से अपनी हार्दिक श्रद्धाजंली अर्पित करता हूँ।

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री
आर्य प्रतिनिधि सभा, उ.प्र.
संचालक-गुरूकुल पूठ, हापुड़

श्री शिव कुमार आर्य को पत्नी शोक

आर्य समाज गोविन्द नगर कानपुर के प्रधान श्री शिव कुमार आर्य की धर्म परायण पत्नी का कुछ कालिक अस्वस्थता के बाद निधन हो गया। आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. के प्रधान श्री देवेन्द्रपाल वर्मा, मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, कोषाध्यक्ष-डॉ. धीरज सिंह एवं आर्य मित्र परिवार ने उनके निधन का समाचार सुनकर शोक श्रद्धांजलि भेंट की।

शोक समाचार

दयानन्द बाल मन्दिर जू.हा.स्कूल महर्षि दयानन्द मार्ग (अचल मार्ग) अलीगढ़ की प्रधानाचार्या श्रीमती सरोज गुप्त के पति श्री विपिन चन्द्र गुप्त का आकस्मिक निधन दिनांक 26.1.2016 को हो गया।

ईश्वर दिवांगतात्मा को सद्गति एवं दुखी परिजनों को मनः शान्ति व धैर्य प्रदान करें।

- आर्य समाज गोलागोकरण नाथ खीरी लखीमपुर की पूर्व प्रधान श्रीमती शीला रानी गुप्त का आकस्मिक निधन हो गया। दिनांक 21.1.2016 को आर्य समाज में श्री विजय कुमार जी राठी की अध्यक्षता में शोक सभा हुयी जिसमें दिवंगतात्मा की आत्मा की सद्गति एवं दुखी परिजनों को मनः शान्ति व धैर्य प्रदान करने की ईश्वर से प्रार्थना की गयी।

-मंत्री

इतिहास प्रदूषण का अवलोकन

(८-१७ टाउनशिप, पो० नर्मदानगर, जि. भरूच, गुजरात - ३६२०१५)

भावेश मेरजा

पिछले कई वर्षो से आर्यसमाज के प्रसिद्ध लेखक प्राध्यापक श्री राजेन्द्र जिज्ञासु जी परोपकारी आदि में प्रकाशित अपने लेखों में एवं अपनी पुस्तकों में आर्यसमाज के अन्य प्रसिद्ध विद्वान् लेखक डॉ० भवानीलाल भारतीय जी के मन्तव्यों एवं उनके 'नवजागरण के पुरोधा दयानन्द सरस्वती' जैसे ग्रन्थों के कई विवरणों को लेकर सतत आलोचना करते आ रहे हैं। इसी प्रवृत्ति के परिणाम स्वरूप जिज्ञासु जी ने अपना एक १६० पृष्ठीय 'इतिहास प्रदूषण' नामक ग्रन्थ लिखकर अभी कुछ ही मास पूर्व 'पण्डित लेखराम वैदिक मिशन' अकोला (महाराष्ट्र) से प्रकाशित किया है।

मैं जिज्ञासु जी के लेखों तथा पुस्तकों का नियमित पाठक रहा हूँ। मैंने उनके इस 'इतिहास प्रदूषण' नामक नए ग्रन्थ को प्राप्त कर दो बार आद्योपान्त पढ़ा। पढ़कर मुझे लगा कि आर्यसमाज के व्यापक हित की दृष्टि से इसकी संक्षिप्त समालोचना प्रकाशित करनी चाहिए। अतः मैंने जिज्ञासु जी के इस ग्रन्थ के बारे में अपना निम्नलिखित अभिप्राय आर्य पत्र-पत्रिकाओं को प्रकाशनार्थ भेजा और 'आर्य सन्देश' ने इसे १३ जुलाई २०१५ के अंक में प्रकाशित किया।

'इतिहास प्रदूषण' के सम्बन्ध में मेरा अभिप्राय

इस पुस्तक में अनुभवी लेखक ने आर्यसमाज के कई लेखकों (प्रमुख रूप से आर्यसमाज के अग्रिम पंक्ति के लेखक भारतीय जी) की उन बातों की आलोचना की हैं, जो उनकी दृष्टि में इतिहास विरूद्ध व अनुचित हैं।

आर्य जगत् लेखक की 'तड़प-झड़प' वाली शैली से सुपरिचित है। यह पुस्तक भी उसी शैली में लिखी गई है। लेखक वयोवृद्ध हैं। जीवन के इस पड़ाव में अपनी इस स्वाभाविक शैली का त्याग करना अब सम्भावतः उनके लिए भी दुष्कर होगा। अन्यथा अपने ही संगठन के समानधर्मी प्रतिष्ठित लेखकों की पुस्तकों में पाई जाने वाली इन अशुद्धियों एवं विसंगतताओं की वे शालीन व संयत भाषा में समालोचना करते तो श्रेयस्कर रहता। संगठन की दृष्टि से भी यही अपेक्षित है कि जहां तक सम्भव हो हम अपनी बात प्रीतिपूर्वक प्रस्तुत करें।

लेखक ने पुस्तक लिखने का प्रयोजन आर्य समाज के क्षेत्र में हो रहे इतिहास के प्रदूषण को रोकना बताया है। यह प्रयोजन निःसन्देह उत्तम व पवित्र है और लेखक की एतद् विषयक चिन्ता भी उचित है। फिर भी एक पाठक के रूप में मुझे लगता है कि कई स्थानों पर लेखक आलोच्य विषय के बहाने किसी व्यक्ति-विशेष पर अनावश्यक चोट करने के प्रवेग में बहकर अतिरेक भी कर गए हैं।

जिज्ञासु जी की इस पुस्तक में मुख्य रूप से भारतीय जी के लेखन को ही लक्ष्य बनाया गया है। अतः इसका प्रत्युत्तर लिखने के लिए भारतीय जी ही सर्वाधिक उपयुक्त व्यक्ति हैं। मगर मैं नहीं जानता कि वर्तमान में अपनी वृद्धावस्था में वे लेखनादि करने में सक्षम हैं या नही।

इतना तो है कि जिज्ञासु जी की यह पुस्तक हमें लेखन व प्रवचनादि कार्यो में अधिक सावधान रहने की अपनी बात यथासम्भव प्रमाण-पुरस्सर लिखने-कहने की आवश्यकता का बोध कराने वाली है।

तिलमिलाने की अपेक्षा यही उत्तम है कि इस पुस्तक से हम कुछ सीखे और अपने आर्यसमाज रूपी संगठन को उसके महान् प्रवर्त्तक की अपेक्षा अनुसार प्रखर, ज्ञान-प्रवर्त्तक, सत्याग्रही, प्रगतिशील, उदार व सक्रिय बनाए। लेखक की इस कृति को पढ़कर उसके विषय में अपनी धारणा बनाने में प्रत्येक पाठक पूर्ण स्वतन्त्र है।

'विवरणों का पुलिन्दा'

जिज्ञासु जी को भारतीय जी की इस बात को लेकर अत्यन्त पीड़ा है कि उन्होंने पण्डित लेखराम जी के द्वारा संगृहीत महर्षि दयानन्द के जीवनचरित्र को 'विवरणों का पुलिन्दा' लिखा है। इसी एक मुद्दे को जिज्ञासु जी ने अपने लेखों एवं पुस्तकों में न जाने कितनी बार उठाया होगा। उनको ऐसा लगता है कि इन शब्दों से भारतीय जी ने पण्डित लेखराम जी के ग्रन्थ का अवमूल्यन या निन्दा की है। तभी तो वे भारतीय जी पर आक्षेप करते हुए लिखते हैं - ''इन्हीं डॉ० भवानीलाल भारतीय जी ने ऋषि जीवन तथा आर्यसमाज के इतिहास को प्रदूषित करने का काम परोपकारिणी सभा में प्रवेश पाकर आरम्भ किया। आपने पं० लेखराम जी लिखित ऋषि जीवन को 'विवरणों का पुलिन्दा' लिखकर टैस्ट केस बनाकर आर्यसमाजियों की श्रद्धा व सिद्धान्त निष्ठा को परखा।'' (इतिहास प्रदूषण, पृष्ठ ३२)

मगर यह आक्षेप सर्वथा अनुचित है। यथार्थ जानने के लिए हम यहां भारतीय जी के 'नवजागरण के पुरोधा-दयानन्द सरस्वती ग्रन्थ का वह पूरा सन्दर्भ प्रस्तुत कर रहे हैं, जिसमें उन्होंने विवरणों का पुलिन्दा शब्द का प्रयोग किया है।

'नवजागरण के पुरोधा दयानन्द सरस्वती ग्रन्थ में पण्डित लेखराम जी द्वारा संगृहीत जीवन चरित्र का लेखक भारतीय जी द्वारा किया गया यथार्थ मूल्यांकन

भारतीय जी ने लिखा है- ''नवम्बर १८८८ से आर्यपथिक ने जीवनी की आधारभूत सामग्री का संग्रह प्रारम्भ किया। १८९२ ई० तक देश के विभिन्न भागों में घूम कर उन्होंने उन सहस्रों व्यक्तिओं से सम्पर्क किया, जिन्होंने स्वामीजी को प्रत्यक्ष देखा था, उनके सम्पर्क में आये थे तथा उनके उपदेश श्रवण का अवसर भी प्राप्त किया था। ऐसे व्यक्तियों के वक्तव्यों को उन्होंने सिलसिलेवार लिपिबद्ध किया। इस प्रकार स्वामी दयानन्द के सम्बन्ध में प्रकाशित विभिन्न समाचारों, सूचनाओं तथा विज्ञापनों का भी उन्होंने संग्रह किया। यह निश्चित है कि यदि पं० लेखराम अकाल में ही काल कवलित नहीं हुए होते तो, दयानन्द का एक व्यवस्थित एवं प्रामाणिक जीवन चरित उन्हीं की लेखनी से लिखा जाकर तैयार हो जाता, किन्तु इससे पूर्व कि वे इस कार्य को समाप्त कर लेते, ६ मार्च १८९७ ई० को एक आततायी के घातक प्रहार से आहत होकर वे परलोकगामी हुए। यह एक संयोग ही था कि पं० लेखराम जिस समय स्वामी जी के जीवन चरित के लेखन का कार्य कर रहे थे, उसी समय उन पर छुरी का प्रहार हुआ। दयानन्द के विचारों और आदर्शो से अनुप्राणित आर्यपथिक के रक्त से वह पाण्डुलिपि सिंञ्जित हो गई, जिसमें वे अपने गुरू और आचार्य के जीवन की कथा लिख रहे थे। पं० लेखराम द्वारा संग्रहीत जीवन चरित अनेक दृष्टिओं से महत्त्वपूर्ण है। यह एक प्रकार से दयानन्द सरस्वती के प्रत्यक्ष सम्पर्क में आने वाले तथा उनके जीवन की विभिन्न घटनाओं से सीधा परिचय रखने वाले लोगों के बयानों पर आधारित है। यदि एक ही घटना या स्थिति का वर्णन भिन्न-भिन्न व्यक्तिओं ने भिन्न-भिन्न प्रकार से किया, तो भी पं० लेखराम ने उन सभी लोगों के वक्तव्यों को एक ही स्थान पर संगृहीत कर लिया था। शायद वे स्वतन्त्र रूप से कोई निष्कर्ष भी निकालते अथवा उन लोगों द्वारा वर्णित बयानों का कोई समन्वित रूप भी प्रस्तुत करते, परन्तु कार्य पूरा होने से पहले ही उनकी मृत्यु हो गई। अतः पाठक को दयानन्द का यह जीवन चरित प्रत्यक्षदर्शियों के द्वारा बताये गये विवरणों का एक पुलिंदा सा प्रतीत होता है। पं० लेखराम ने स्वामी जी के पृथक् पृथक् स्थानों पृथक् पृथक कालों में जाने की घटनाओं को कालक्रमानुसार वर्णित न कर स्थान क्रम से एक स्थान पर ही रख दिया है। निश्चय ही यह सामग्री संग्रह का एक प्रयास मात्र था, साहित्यिक शैली में लिखी गई जीवनी के तत्त्व तो इसमें नगण्य ही हैं। तथापि उपादान सामग्री की दृष्टि से इस ग्रन्थ का महत्त्व निर्विवाद है।'' (नवजागरण के पुरोधा दयानन्द सरस्वती प्रथम संस्करण, वैदिक पुस्तकालय अजमेर, १९८३ ई०, पृष्ठ २८-२९)

मुझे तो भारतीय जी द्वारा किए गए उपर्युक्त मूल्यांकन में कुछ भी अनुचित नहीं लगता है। उन्होंने पण्डित लेखराम जी के द्वारा संगृहीत जीवनचरित्र का वास्तविक चित्रण ही किया है।

इसी बात को ठीक से समझने के लिए मैं यहां आर्यसमाज के प्रसिद्ध विद्वान् पंडित घासीराम जी (मेरठ) का एतद् विषयक मन्तव्य पाठकों के ध्यान में लाना चाहता हूँ।

पं० लेखराम जी द्वारा संगृहीत 'महर्षि दयानन्द जीवन-चरित्र' का पं० घासीराम जी के द्वारा किया गया सम्यक् मूल्यांकन

पण्डित घासीराम जी (मेरठ) ने लिखा है - ''आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने स्वर्गीय पण्डित लेखराम को ऋषि-जीवन की सामग्री इकट्ठी करने के लिये नियत किया। पण्डित जी ने पांच वर्षो तक उसके संग्रह करने में अनथक परिश्रम किया और इसमें इन्हें सफलता भी अच्छी हुई। सामग्री संग्रह करने के पश्चात वह अपने नोटो को क्रमबद्ध करने बैठे परन्तु प्रचार कार्य के कारण उसमें अन्तराय पड़ते रहे और वह अपनी संगृहीत सामग्री के स्वल्प अंश को ही क्रम में रखने का प्रयत्न कर पाये कि ६ मार्च १८९६ को एक यवन घातक ने उनका बध कर दिया। न वह सारी सामग्री को ही क्रमबद्ध कर पाये और न उसका पुनर्निरीक्षण ही कर सके। उनके पश्चात यह काम आर्य समाज के प्रसिद्ध विद्वान् कार्यकर्त्ता श्री मास्टर आत्माराम अमृतसरी को सौंपा गया। उन्होंने और उनके सहकारियों ने जिस महान् परिश्रम से पण्डित लेखराम जी के छोड़े हुए काम को पूरा किया, उसके लिए वह शतशः और सहस्रशः धन्यवाद के पात्र हैं। पण्डित लेखराम जी और मास्टर आत्माराम जी के परिश्रम का फलस्वरूप उर्दू में लिखा हुआ वह दयानन्द-चरित है, जो आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की ओर से सन् १८९७ में प्रकाशित हुआ। उसे पढ़कर पण्डित लेखराम जी के असाधारण परिश्रम का पता चलता है। उसे देखकर एकदम अवाक् रहना पड़ता है। पंडित जी ने पांच वर्षो के कम में इतना काम किया, जितना दो मनुष्य भी नहीं कर सकते थे। वह बीसियों स्थानों पर गये और सहस्रों मनुष्यों से मिले और ऋषि जीवन सम्बन्धी घटनाओं को लिपिबद्ध किया। उक्त उर्दू चरित ज्ञान कि एक खानि है। ऋषि का कोई भी जीवन-चरित-लेखक उसकी सहायता के बिना एक पग भी आगे नहीं रख सकता। परन्तु उसमें कुछ त्रुटियां हैं, जो न पण्डित लेखराम की हैं और न मास्टर आत्माराम की। उसमें घटनाओं के वर्णनों का विश्लेषण, समीक्षण और उनकी समालोचन नहीं की गई, न घटनाओं को पूर्वापर सम्बन्ध की दृष्टि से एक क्रम में रखा गया है। केवल स्थानविशेष की घटनाओं के भिन्न-भिन्न मनुष्यों के कथनों को एकत्र कर दिया गया है। इसका परिणाम यह हुआ है कि एक ही घटना के कई प्रकार के वर्णन पाये जाते हैं, एक ही घटना का भिन्न काल में होना पाया जाता है। पाठक चक्कर में पड़ जाते हैं कि किस वर्णन को ठीक मानें। कहीं कहीं तो यह पता लगना ही कठिन हो जाता है कि घटना का वास्तविक रूप क्या था। घटनाओं का वर्णन एक शृंखला में भी नहीं है। यह त्रुटियां अवश्य हैं, फिर भी यदि यह पुस्तक प्रकाशित नहीं हुई होती तो 'ऋषि-जीवन-चरित' का पूर्णतया लिखना असम्भव हो जाता। इसलिये हमें सदा के लिये पण्डित लेखराम का नितान्त आभारी रहना होगा। जो सामग्री वह एकत्र कर गये हैं, उसका बहुत बड़ा अंश असंगृहीत ही रह जाता, यदि वह इतना परिश्रम न करते।'' (महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन-चरित, मूल लेखक- पं० देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय, संग्रहकर्ता की भूमिका, पृष्ठ २, प्रथम आवृत्ति, सं० १९६० वि०, आर्य साहित्य मण्डल, अजमेर)

उपर्युक्त उद्धरण से यह सुस्पष्ट होता है कि भारतीय जी ने भी पण्डित लेखराम आर्यपथिक द्वारा संगृहीत महर्षि दयानन्द जीवन-चरित्र के विषय में प्रायः वही लिखा है, जो पण्डित घासीराम जी ने आज से ८२ वर्ष पूर्व १९३३ ई० में लिखा था। इन दोनों ही आर्य विद्वानों के एतद् विषयक विचारों में कुछ भी आपत्तिजनक या असंगत नहीं है। मुझे विश्वास है कि कोई भी व्यक्ति अगर निष्पक्ष भाव से पण्डित लेखराम जी द्वारा संगृहीत महर्षि दयानन्द जीवन-चरित्र को पढ़ेगा, उसे पं० घासीराम जी एवं भारतीय जी के उपर्युक्त मन्तव्यों की सच्चाई अवश्य अनुभव होगी।

पण्डित लेखराम जी के लिए सम्मान सूचक शब्द

जिज्ञासु जी को इस बात को लेकर भी भारतीय जी से शिकायत है कि वे पण्डित लेखराम जी के नाम के साथ जी लगाने से भी बचते रहते हैं और उन्हें कभी हुतात्मा तक नहीं लिखा। (द्रष्टव्य : 'इतिहास प्रदूषण, पृष्ठ ३२) जिज्ञासु जी ने अपनी यह नाराजगी भी अनेक स्थानों पर प्रदर्शित की है। वैसे उनकी बात में तथ्य नहीं है। क्योंकि भारतीय जी ने पण्डित लेखराम के नाम के साथ जी लगाया है। प्रमाण के लिए द्रष्टव्य - (१) स्वामी दयानन्द सरस्वती : व्यक्तित्व एवं विचार, पृष्ठ १३, संस्करण १९९७ ई०। लिखा है - ''.... आर्यपथिक जी ने .....'' (२) पण्डित लेखराम कृत म० द० स० का जीवनचरित्र, सम्पादकीय वक्तव्य, पृष्ठ-ग, संस्करण २००७ ई०। लिखा है - ''पं० लेखराम जी का यही ग्रन्थ था।'' ऐसे ही भारतीय जी ने पण्डित लेखराम जी को हुतात्मा भी लिखा है। द्रष्टव्य - 'आर्यसमाज के विद्वान लेखक ओर साहित्यसेवी, पृष्ठ ६, संस्करण २००७ ई०।

शेष पृष्ठ.....५

पृष्ठ.....४ का शेष

पण्डित लेखराम जी के लिए वहां लिखा गया है -'' ... एक आततायी ने उन पर छुरे का बर्बर प्रहार कर ६ मार्च, १८६७ को उन्हें हुतात्माओं की श्रेणी में बिठा दिया।

वैसे भी इतिहास-प्रधान जीवनचरित्रों में चरित्रनायक के लिए स्थान-स्थान पर पूज्य भाव व्यक्त करनेवाले शब्दों का बहुलता से प्रयोग करना ठीक भी नहीं है। दूसरी बात यह भी है कि प्रत्येक लेखक की अपनी मौलिक लेखन शैली व अभिव्यक्ति का ढंग होता है। अतः किसी प्रतिष्ठित लेखक से यह आग्रह करते कहना कि आप हमें पसन्द आए उसी शैली में लिखो, अनुचित है। श्री अरविन्द घोष ने महर्षि के लिए केवल दयानन्द शब्द का ही प्रयोग किया है - बिना उनके नाम के साथ किसी सम्मान सूचक विशेषण प्रयुक्त किए। फिर भी श्री अरविन्द की इस शैली को न केवल निर्दोष ही माना जाता है, प्रत्युत उसकी प्रशंसा ही की जाती है।

डॉ० स्वामी सत्यप्रकाश द्वारा भारतीय जी की संस्तुति

जिज्ञासु जी इतिहास प्रदूषण के पृष्ठ ४६ पर लिखते हैं कि - स्वामी सत्यप्रकाश जी सरस्वती ने बिना पढ़े, बिना विचारे (भारतीय जी के) इन दोनों (अर्थात् नवजागरण के पुरोधा तथा ऋषि दयानन्द के भक्त, प्रशसंक और सत्संगी) पुस्तकों के प्राक्कथन लिख डाले। क्या स्वामी सत्यप्रकाश जी जैसे मनीषी साहित्यकार के लिए ऐसी बात लिखना प्रकारान्तर से उनकी अवमानना नहीं है ?जिज्ञासु जी ने आगे लिखा है कि - ''इस लेखक की समीक्षा पढ़कर स्वामी जी ने भारतीय जी से कहा था कि अपने ग्रन्थ के साथ एक शुद्धि-अशुद्धि पत्र लगायें। इसके बिना बिक्री नहीं होनी चाहिए। (पृष्ठ ४६) परन्तु स्वामी जी ने भारतीय जी से ऐसा कहा था, इस बात का कोई ठोस प्रमाण इतिहास प्रदूषण में हमें पढ़ने को नहीं मिलता है।

सच तो यह है कि भारतीय जी के लिए स्वामी सत्यप्रकाश जी ने प्रशंसात्मक ही लिखा है। जैसे कि - नवजागरण के परोधा में द्वे वचसी प्रकरण में स्वामी जी ने भारतीय जी के लिए इन शब्दों को प्रयोग किया है- ''हमारे ख्यातिलब्ध लेखकों और चिन्तकों में से एक, स्वामी (दयानन्द) जी की विचारधारा से पूर्णतया परिचित, दयानन्द विषयक समस्त ऐतिहासिक सामग्री से परिचित, अनेक ग्रन्थों का प्रणयन करने वाले, सभी प्रकार से स्वामी दयानन्द का जीवन-चरित लिखने के अधिकारी, स्वामी दयानन्द का जीवन-चरित लिखने में संयम से काम लेने वाले, इतिहास-लेखक की गौरवपूर्ण विशेषता युक्त, अध्यवसाय और अनुभव के आधार पर ऋषि (दयानन्द) का जीवन-चरित जनता को भेंट करने वाले, लेखनी के महाधन, इत्यादि। (नवजागरण के पुरोधा में द्वे वचसी, पृष्ठ २, ४)

भारतीय जी के भारतवर्षीय मतमतान्तर समीक्षा ग्रन्थ की भूमिका स्वामी सत्यप्रकाश जी ने ही लिखी है, जिसमें उन्होंने भारतीय जी को ''आर्ष साहित्य के प्रसिद्ध विद्वान् व योग्य लेखक'' लिखा है। (द्रष्टव्यः पृष्ठ ८, २०)

भारतीय जी के एक अन्य ग्रन्थ 'ऋषि दयानन्द के भक्त, प्रशंसक और सत्संगी की भूमिका भी स्वामी सत्यप्रकाश जी ने ही लिखी है, जिसमें उन्होंने भारतीय जी को ''आर्यजंगत् के प्रसिद्ध विद्वान् इतिहासज्ञ एवं आलोचक'' लिखा है और यह भी लिखा है कि भारतीय जी जो कुछ लिखते हैं, अधिकारपूर्वक और अपनी ललित शैली में लिखते हैं। (द्रष्टव्यः पृष्ठ ११,१५)

इसी ऋषि दयानन्द के भक्त, प्रशंसक और सत्संगी पुस्तक की भूमिका में स्वमी सत्यप्रकाश जी ने कर्नल प्रतापसिंह आदि के बारे में जो लिखा है, वह भी पठनीय एवं विचारणीय है। स्वामी जी ने वहां लिखा है - ''राजस्थान सम्बन्धी उल्लेखनीय व्यक्तियों में सबसे महत्त्वपूर्ण स्थान उदयपुर के महाराणा सज्जनसिंह के बाद जोधपुर नरेश महाराजा जसवन्तसिंह जी और उनके अनुज कर्नल सर प्रतापसिंह का है। दोनों के सम्बन्ध में भारतीय जी ने विवेचनात्मक विवरण दिए हैं। कर्नल प्रतापसिंह जी ने महर्षि दयानन्द के सम्बन्ध में जो भूमिका निभाई, वह आर्यसमाज के सम्बन्ध में अद्वितीय है। भारतीय जी का दिया हुआ विस्तृत विवरण प्रत्येक विचारक को पढ़ना चाहिए। जोधपुर नरेश का बड़प्पन ही तो था कि ऋषि ने उन्हें जो व्यक्तिगत पत्र लिखे थे, उन्होंने सुरक्षित रखे।'' (द्रष्टव्य : पृष्ठ १४-१५)

इतिहास प्रदूषण में भी प्रदूषण ?

जिज्ञासु जी ने इतिहास प्रदूषण में पृष्ठ ३३ पर लिखा है - आपने (अर्थात् भारतीय जी ने) जोधपुर नगर की एक कहानी गढ़कर अपने ग्रन्थ में (अर्थात् नवजागरण के पुरोधा में) जोड़ी है। - कर्नल प्रतापसिंह ने इस समय महर्षि से पूछा कि क्या डॉ० अली मर्दान पर उन्हें विष देने का सन्देह है ?यदि ऐसा है तो वे स्पष्ट कहें, ताकि उस पर अभियोग चलाया जा सके। महर्षि ने इसका कोई उत्तर नहीं दिया। जिज्ञासु जी ने भारतीय जी पर आक्षेप करते हुए लिखा है - यह कहानी मनगढ़त है। प्रक्षेप है। यह इतिहास प्रदूषण है। यह तत्कालीन किसी पत्र में नहीं छपी। यह किसी पुराने जीवनी लेखक ने नहीं लिखी। पं० लेखराम जी, देवेन्द्र बाबू जी और दीवान हरबिलास जी के ग्रन्थों में नहीं। (इतिहास प्रदूषण, पृष्ठ ३३)

मगर जिज्ञासु जी की उपर्युक्त बात एवं भारतीय जी पर किया गया उनका यह आक्षेप मिथ्या है। क्योंकि महर्षि दयानन्द के सुप्रसिद्ध आद्य जीवनी लेखक श्री बाबू देवेन्द्रनाथ जी मुखोपाध्याय ने ही दयानन्द-चरित में पृष्ठ ६१५ पर यही बात लिखी है, जो भारतीय जी ने लिखीं है। श्री देवेन्द्रनाथ जी ने लिखा है - कर्नल सर प्रतापसिंह ने महाराज (अर्थात् महर्षि दयानन्द) से बहुत पूछा कि यदि अलीमरदान खाँ ने आपको विष दिया हो तो आप कह दें, हम उस पर अभियोग चलावें, परन्तु महाराज ने कोई उत्तर न दिया। (२०५० वि० संस्करण) इससे यही सिद्ध होता है कि भारतीय जी ने यह बात मनगढ़ंत नहीं लिखी है। इस प्रकार भारतीय जी पर किया गया यह आक्षेप भी निराधार एवं मिथ्या सिद्ध होता है।

नन्हीं को लेकर विवाद उत्पन्न होना दुर्भाग्यपूर्ण

भारतीय जी ने नवजागरण के पुरोधा में पृष्ठ ५०७ पर लिखा है - नन्ही भगतन की नाराजगी दिन प्रति दिन बढ़ती गई। उसकी ईर्ष्याग्नि में घृत डालने का काम रामानुज सम्प्रदाय के मुखिया विजयसिंह मेहता ने किया, जिन्होंने वैष्णव मतावलम्बिनी इस वेश्या को यह कह कर भड़काया कि स्वामीजी सहज ब्राह्मणद्वेषी तथा मूर्तिपूजा विरोधी तो हैं ही, वैष्णव मत के कट्टर शत्रु भी है। (प्रथम संस्करण १६८३ ई०)

फिर भी जिज्ञासु जी ने अपने द्वारा अनुदित व सम्पादित महर्षि दयानन्द सरस्वती सम्पूर्ण जीवनचरित्र के भाग २, पृष्ठ ६६० (प्रकाशन वर्ष २०१३ ई०) पर लिखा है - श्रीमान् भारतीय जी ने अपने ग्रन्थ नवजागरण के पुरोधा में नन्ही को वेश्या तो कहीं भी नहीं लिखा। क्या जिज्ञासु जी की यह बात मिथ्या नहीं है ?

नवजागरण के पुरोधा में भारतीय जी ने नन्हीं के लिए जिन शब्दों का प्रयोग किया है, वे समुचित हैं। दयानन्द सन्देश के अगस्त २००१ के अंक में प्रकाशित अपने लेख में भी भारतीय जी ने जो कुछ लिखा है, इससे भी यह तो नहीं लगता कि उन्होंने नन्हीं को किंचित् मात्र महिमा मंडित किया है। फिर भी मैं समझता हूँ कि अगर भारतीय जी नवजागरण के पुरोधा में नन्हीं के लिए प्रयुक्त अपने मूल शब्दों पर ही स्थिर रहते और बाद में इस विषय की विवेचना करते समय उन शब्दों को परिवर्तित करने या उन में शब्दान्तर करने की चेष्टा से पृथक् रहते तो अच्छा होता।

वास्तव में नन्हीं के चरित्र के प्रकाशनार्थ विभिन्न इतिहासकारों तथा लेखकों द्वारा किंचित भिन्नता लिए हुए मगर पर्याय जैसे माने जाने वाले शब्दों का प्रयोग किया गया हो तो उसे लेकर विवाद करने का क्या औचित्य है?उदाहरण के रूप में ऋषि दयानन्द सरस्वती के पत्र और विज्ञापन (सम्पादक - पं० भगवद्दत्त, पं० युधिष्टिर मीमांसक, तृतीय संस्करण) के द्वितीय भाग के सप्तम परिशिष्ट में पृष्ठ ६६२-६६३ पर नन्ही भगतन का संक्षिप्त परिचय दिया गया है। इस परिशिष्ट के लेखक राजपूताना के प्रसिद्ध इतिहासज्ञ श्री ठा० जगदीशसिंह गहलोत (अध्यक्ष पुरातत्त्व विभाग जयपुर) हैं। इस परिचय में नन्हीं के लिए उस विशेषण का प्रयोग नहीं किया गया है, जिसका अति आग्रह जिज्ञासु जी कर रहे हैं। वहां लिखा गया है- यह जोधपुर नरेश हिजहाईनेस महाराजा जसवंतसिंह बहादुर की रखेली थी। श्री हरविलास सारडा जी ने ऋषि के अंग्रेजी जीवन चरित्र में नन्हीं के लिए शब्द का प्रयोग किया है, जिसका में अर्थ दिया गया है -

जिज्ञासु जी ने इतिहास प्रदूषण में हमारे आन्दोलन के कुछ ठोस परिणाम निकलने लगे हैं शीर्षक अन्तर्गत पृष्ठ १०७-१०८ पर लिखा है - भारतीय जी ने अब अपनी एक पुस्तक (ऋषि दयानन्द के भक्त, प्रशंसक और सत्संगी) के इसी वर्ष (२०१४ ई०) के संस्करण में नन्ही भगतन को चार बार वेश्या लिखा है। महाराणा जसवन्त सिंह को वेश्यागमन का दोषी मानकर भी तो नन्ही को वेश्या ही बताया। वस्तुतः लेखक का यह विशुद्ध भ्रम है। क्योंकि भारतीय जी के इस ग्रन्थ के १६८६ ई० वाले प्रथम संस्करण, एवं २०१४ ई० वाले द्वितीय संस्करण में कि जिसको लेकर जिज्ञासु जी ने उपर्युक्त बात लिखी है - इन दोनों संस्करणों में सम्बन्धित प्रकरण में कुछ भी भेद नहीं है। प्रथम संस्करण में भी यही लिखा गया था।

जिस नन्हीं के कारण ऋषि दयानन्द जैसे महामानव की अकाल मृत्यु हुई, उस स्त्री के लिए प्रयुक्त अशुभ विशेषणों को लेकर उत्पन्न किए गए इस विवाद को मैं अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण समझता हूँ।

जीयालाल की पुस्तक का नाम

जिज्ञासु जी ने इतिहास प्रदूषण के पृष्ठ १४५ पर लिखा है - अपने ग्रन्थ में भारतीय जी ने लाला जीयालाल की कुख्यात पुस्तक दयानन्द छल कपट दर्पण को नया नाम दयानन्द चरित्र दर्पण दिया है। आपने यह आरोप अपने लेखों में भी दोहराया है। परन्तु वास्तविकता यह है कि जीयालाल की इस पुस्तक की दूसरी आवृत्ति दीर्घ अन्तराल के पश्चात् १६८६ वि० में पं० कामता प्रसाद दीक्षित (अमरौधा, जि० कानपुर) द्वारा प्रकाशित हुई थी। उसमें पुस्तक के आरम्भ में ही लेखक जीयालाल का एक पृष्ठीय सविनय निवेदन छपा हुआ पाया जाता है। इस सविनय निवेदन में स्वयं जीयालाल ने लिखा है - यद्यपि जो कुछ नाम पुस्तक का प्रथम ही लिखा गया वह बदला नहीं जा सकता परन्तु हमको यह पुस्तक द्वारा सत्यासत्य का निर्णय कराना है, व्यर्थ किसी का दिल दुखाना अभीष्ट नहीं। इसलिये आर्य भाइयों के मनोरंजनार्थ इस पुस्तक का नाम आदि पृष्ठ पर दयानन्द चरित्र दर्पण लिखा गया है।

जिज्ञासु जी ने इतिहास प्रदूषण में पृष्ठ ६ पर लिखा है- आर्य सन्देश साप्ताहिक दिल्ली में एक लेख देकर (भारतीय जी ने) स्वयं को धरती तल पर आर्यसमाज का सब से बड़ा इतिहासकार घोषित करके जो जी में आता है, लिखते चले जा रहे हैं। यही बात पृष्ठ ६७ पर एवं अन्य स्थानों पर भी किंचित भिन्न शब्दों में लिखी गई है। पृष्ठ १६ पर भारतीय जी के कथन का आशय जिज्ञासु जी ने अपने शब्दों में लिखा है। अच्छा तो यही होता कि भारतीय जी के कथन का अपनी भाषा में आशय लिखने के स्थान पर उनके द्वारा लिखे गए मूल कथन को ही अविकल उद्धृत कर दिया जाता। वैसे भारतीय जी जैसा मूर्धन्य लेखक अपने लिए ऐसा आत्मश्लाघा युक्त कथन लिखे - यह बात अविश्वनीय प्रतीत होती है।

इतिहास प्रदूषण की मेरे द्वारा की गई संक्षिप्त समीक्षा जो आर्य सन्देश के १३ जुलाई २०१५ के अंक में छपी थी, उसे कई आर्य व्यक्तियों ने सराहा है। एक विख्यात आर्य विदूषी ने अपने सन्देश में मुझे लिखा है - ''आपने बहुत संयत ढंग से अपनी (व हम जैसे बहुतों की भी) भावना संप्रेषित कर दी है। वस्तुतः पत्रिकाओं के सम्पादकों द्वारा लेखकों को अपना ऋणी बनाने के दुष्परिणाम सामने आ रहे हैं। जिनके हाथ में मठ, संगठन, पत्रिकाएँ और किसी भी प्रकार के अधिकार हैं, वे अपनी मठाधीशी के लिए व निजी कुंठाओं के कारण बदले लेने के लिए आर्यसमाज के विवेकवान् लेखकों तक को कैसे दुष्प्रभावित कर रहे हैं, इसका सबल उदाहरण है यह घटना बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण प्रकरण चल रहा है ... कम से कम विरोध का, एक क्षीण-सा ही सही, स्वर उठ रहा है यह पता चलना चाहिए। साधुवाद।

इतिहास प्रदूषण की मेरे द्वारा की गई संक्षिप्त समीक्षा पर जिज्ञासु जी ने परोपकारी के सितम्बर (द्वितीय) २०१५ के अंक में अपनी प्रतिक्रिया लिखी है।

इतिहास प्रदूषण की कुछ विसंगतियां जो एकदम से प्रथम दृष्टिया दिखलाई पड़ीं, उनकी सप्रमाण समालोचना करने का प्रयास मैंने लेख में किया है। मैं किसी का न तो अन्ध अनुयायी हूँ, न वकील हूँ और न ही निन्दक। अपने विवेक के अनुसार जो बात जैसी लगती है, उसे प्रमाण के साथ प्रस्तुत करने का निष्ठापूर्वक प्रयास करता हूँ। लेख के समापन में मैं महर्षि दयानन्द जी का निम्नलिखित उपदेश, जो उन्होंने, पूना में दिए गए अपने एक व्याख्यान में दिया था, प्रस्तुत करना चाहता हूँ।

आप्तोपदेश

भगवान पतंजलि ने महाभाष्य में कहा है कि जो दौड़ेगा सो गिरेगा, इसमें कुछ दोष नहीं- धावतः स्खलनं न दोषाय भवति- इस वचन के आधार से हमारे बोलने में कुछ प्रमाद अथवा अशुद्ध प्रयोग निकल आवे तो पण्डितों को उसका विषाद न मानना चाहिए। हम सर्वज्ञ नहीं, और सब बातें हमें उपस्थित भी नहीं। हमारे बोलने में अनन्त दोष होते होंगे। इसका हमें ज्ञान भी नहीं है। दोष बतलाने पर हम स्वीकार करेंगे। सत्य की छानबीन होनी चाहिए, वितण्डा नहीं होनी चाहिए, यही हमारी बुद्धि में आता है। थोड़ा-सा गुण पर भी ध्यान देना चाहिए और दोष को क्षमा करना चाहिए। (उपदेश-मंजरी, अष्टम उपदेश)

कल्पना करें कि यदि आज महर्षि दयानन्द सरस्वती जी हमारे बीच पहुंच जायें तो वह क्या कहते।

(मेरा व्यक्तिगत जागरूक चिन्तन)

पं० उम्मेदसिंह विशारद

वैदिक प्रचारक मान्यवर श्रद्धेय आर्यो।

यदि हम आज कल्पना करे कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी हमारे बीच आ जाते तो वह आर्य जगत की गतिविधियां, कार्य प्रणाली एवं आर्य जगत से बाहर सनातन धर्म मानने वालो की कार्य प्रणाली देखकर आश्चर्य करते। वह सोचेंगे कि जिस ईश्वरीय वाणी वैदिक धर्म व सामाजिक राजनैतिक सुधार के लिये मैंने जीवन बलिदान किया था। परन्तु आज इस धरती पर बहुत ज्यादा पाखण्ड बढ़ गया है। इन पाखण्डों को दूर करने के लिए मैंने आर्य समाज रूपी ज्योति जगाई थी, वह जल तो रही है किन्तु उतनी तेज रोशनी से नहीं। धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक पाखण्ड का अन्धकार बहुत बढ़ गया है, आज आर्य समाज की ज्योति उस अन्धकार को दूर करने में क्यों अक्षम हो रही है, वे सोचते ?

महर्षि दयानन्द जी सोचते - मैंने सत्यार्थ प्रकाश में विशेष कर आर्यो को निर्देश दिया कि लोकेषणायास्य वित्तेषणायाश्य पुत्रेषणायैरूर्यत्थाया

(शत०का० सत्यार्थ प्रकाश से)

अर्थातः लोक में प्रतिष्ठा व लाभ धन से भोग वा मान्य पुत्रादि के मोह से अलग होके गृहस्थी, वानप्रस्थी व सन्यासी लोग भिक्षुक होकर रात दिन मोक्ष के साधनों में तत्पर रहे।

महर्षि कहते : हे आर्यो, तुम तीनो वर्ग अपने सिधान्तो से कही न कहीं समझौता कर रहे हो, यदि पूर्ण सिधांत्तो पुरूषार्थ व आदर्शो पर चलते तो आज कृण्वन्तो विश्वमार्यम का लक्ष्य पूरा कर लेते।

गृहस्थास्तु यदा पश्येद्वलीपलित मातयनः।

अपत्यस्यैव चापत्यं तदारण्यं समाश्रयेत।।

(शत०का० १४ सत्यार्थ प्रकाश से)

अर्थात : जब गृहस्थी शिर के स्वेत केश और त्वचा ढीली हो जाये और लड़के का लड़का भी हो गया हो तब वन में जाके बसे।

स्वध्यायेन जपैर्होमेस्वेविधेनेज्यया सुतैः।

महायज्ञेश्य यज्ञैश्यच ब्राहनीय त्रियते तनुः।।

(मनु- सत्यार्थ प्रकाश से)

अर्थात : गृहस्थी को पढ़ने पढ़ाने विचार करने कराने, नाना विद्य होम सम्पूर्ण वेदो को पढने पढ़ाने धर्म से सन्तानोत्पत्ति व पंच महायज्ञ करने का आदेश।

महर्षि कहते हे आर्यो: सर्व प्रथम अपने को परिवार को आर्य बनावो, फिर जगत को आर्य बनावो।

न सा सभा यत्र न सन्ति वृद्वा, वृद्वा न ते ये न वदन्ति धर्मम्।

नासौ धर्मो यत्र न सत्य मस्ति न तत सत्यं यच्छलेना म्युपेतन।।

(महाभारत-सत्यार्थ प्रकाश से)

अर्थात : वह सभा नही जिसमें वृद्ध न हो, व वृद्ध नही जो धर्म की बात नही बोलते वह धर्म नही जिसमें सत्य न हो और न वह सत्य है जो छल से युक्त हो।

महर्षि कहते हे आर्यो: तुम सबको सदैव सत्य को ग्रहण और असत्य को छोड़ने के लिये तत्पर रहना चाहिए। चाहे संसार बैरी हो जाये, मृत्यु भी सम्मुख हो किन्तु सत्य पथ को कभी नही छोड़ना चाहिए।

ओउम् इन्द्र वृर्धन्तो प्तुरः कृण्वन्तो विश्वमार्यम।

अपघ्नन्तो अराव्णः।। (ऋ०)

महर्षि कहते हे आर्यो: मैं तुम्हें आशीर्वाद देकर तुम्हारी प्रशन्सा करता हूँ तुमने अब तक वेदो की रक्षा की है। वैदिक धर्म की मसाल जला के रखी है। यज्ञों को जीवित रखा हुआ है। आर्य समाज भवनों का बहुतायत में निर्माण किया है। किन्तु अभी बहुत कुछ पुरुषार्थ करना बाकी है। सारे विश्व को आर्य बनाने का संकल्प पूरा करना है।

संगच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनासि जानताम।

देव भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते।। (ऋ०)

महर्षि कहते हे आर्यो: इस मंत्र को तुम भूलते जा रहे हो। क्योंकि आर्य समाज की स्थापना के बाद पचास साल तक तो आर्यो ने त्याग, पुरुषार्थ, व बलिदान की मिसाल कायम की थी और एक संगठन में चलते थे। किन्तु अब महसूस हो रहा है तुम ईकाई आर्य समाज में, व प्रतिनिधि व सार्वदेभिक सभाओं में आपस में लड़ रहे हो। तुम लोगों के झगड़े न्यायालयों में भी पहुंच गये है। जबकि न्यायपालिका तुम्हारे आधीन होनी चाहिए थी। अभी भी वक्त रहते एक हो जाओ सब झगड़े समाप्त करो। एक संगठन के झन्डे के नीचे कार्य करो।

यत्र धर्मो ह्यव्यधर्म्मेण सत्य नृतेन च।

हयन्ते प्रेक्षमाणानां हतास्तत्र सभासदः।।

(मनु सत्यार्थ प्रकाश से)

अर्थातः जिस सभा में सभा सदो को देखते २ आधर्म से धर्म और झूठ से सच मारा जाता हो। उस सभा के सभा सद मरे हुए के समान है।

महर्षि कहते हे आर्यो: देखने में आ रहा है आप लोग अर्थात सन्यासियों, उपदेशकों पुरोहितो व पदाधिकारियों में कही न कही गुट बाजी व ईर्ष्या से सत्य का हनन हो रहा है। इसलिए मेरा आदेश है कि तुम सभी आर्य आपसी कलह छोड़ कर सत्य मार्ग पर आ जावो और अपनी अपनी हटधर्मी छोड़ो। जिससे आर्य समाज की सर्वागीण उन्नति होगी। और सभी वर्ग अपना अपना अहंकार छोड़ कर ईष्या द्वेष समाप्त करो। सारा संसार तुम्हारी ओर देख रहा है।

भारत वर्ष (आर्यावर्त) और आर्यो का सौभाग्य

ईश्वर की कृपा से भारत जैसे ऋषि मुनियों के देश में सारे विश्व के देशों को छोड़कर भारत की पवित्र भूमि में ही ईशकृपा से देव महर्षि दयानन्द का जन्म हुआ है। यह भारत वासियों का परम सौभाग्य है। कि सृष्टि उत्पत्ति के देश में ही जन्म हुआ। हमारे कई जन्मों के पुण्य प्रताप से विश्व की सर्वोच्च धार्मिक, सामाजिक संगठन आर्य समाज से हमें जुड़ने व कार्य करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। इन दो कारणों से हमारा पर सौभाग्य है।

आत्म निवेदन

मान्यवर आर्य श्रेष्ठो, यदि हम महर्षि दयानन्द जी के सच्चे अनुयायी है तो हमे हर समय आभास करना चाहिए कि पूज्य देव दयानन्द हमारे मार्ग दर्शक सदैव हमारे सम्मुख है, और हमारे प्रत्येक कार्यो को देख रहे है। लाखों जन्मों के पुण्य प्रताप से वेद मार्ग पर चलने का यह जीवन हमें प्राप्त हुआ है। महर्षि दयानन्द जी ने हमें सच्चे ईश्वर व उनकी वाणी वेदों का मार्ग बताया है। आज हमारे चारो ओर घोर अन्धविश्वास व नयी नयी धार्मिक व सामाजिक कुरीतियां झाड़ियों की तरह उग रही है हमारे सम्मुख विशाल चुनौतियां खड़ी है। हमें समस्त भेद, ईष्या, अहंकार एक शक्तिशाली संगठन में एक स्वर से इन चुनौतियों के निवारण हेतु आन्दोलनरत होना पड़ेगा। तभी हम महर्षि दयानन्द की जय-आर्य समाज अमर रहे वेद की ज्योति जलती रहे, ओ३म् का झण्डा ऊँचा रहे। सच्चे मायनों में कहने के अधिकारी होंगे।

वैदिक विज्ञान की मान्यताएं

वैदिक विज्ञान की मान्यता है कि आत्मा के तीन शरीर होते हैं :-

(१) स्वाभाविक शरीर (२) सूक्ष्म शरीर (३) स्थूल शरीर

(१) स्वाभाविक शरीर - यह आत्मा का मूल शरीर होता है। इसमें पांच प्राण, पांच ज्ञानेद्रियां, मन तथा बुद्धि होते है। यह नित्य होता है तथा प्रलय काल में भी बना रहता है। इसका आकार का दस हजारवां भाग होता है। आत्मा मुक्ति काल में इस शरीर से ही आनन्द का भोग करता है।

(२) सूक्ष्म शरीर - इसमें पांच प्राण, पांच ज्ञानेन्द्रियां पांच सूक्ष्मभूत गन्धतन्मात्रा, रस तन्मात्रा, रूप तन्मता, स्पर्श तन्मात्रा तथा शब्द तन्मात्रा तथा मन और बुद्धि पे १७ तत्व होते हैं। यह एक शरीर से दूसरे शरीर में जाता रहता है। प्रलयकाल तथा मुक्ति में इसका अभाव होता हैं

(३) स्थूल शरीर - यह दिखायी देने वाला स्थूल शरीर है। इसमें पांच प्राण, पांच ज्ञानेन्द्रिया, पांच कर्मेन्द्रिया, पांच स्थूल भूत (पृथिवी, जल, अग्नि, वायु तथा आकाश), मन तथा बुद्धि ये २२ तत्व होते है। आत्मा मृत्यु के समय इस स्थूल शरीर को त्यागकर कर्म तथा ज्ञान के अनुसार नया स्थूल शरीर धारण कर लेता हे।

(२३) वैदिक विज्ञान की मान्यता के अनुसार कर्म तीन प्रकार के होते हैं -

(१) प्रारब्ध कर्म (२) संचित कर्म (३) क्रियमाण कर्म

(१) प्रारब्ध कर्म :- प्रारब्ध कर्म वे कर्म है जिनका फल भोगने के लिए हमें यह शरीर मिला है।

(२) संचित कर्म - संचित कर्म पूर्व जन्मों में अथवा वर्तमान जन्म में किये गये वे कर्म है जिनका जन्म हमें इस जन्म में नहीं मिल पायेगा। संचित कर्मो के आधार पर ही अगले जन्म में जाति, आयु तथा भोग प्राप्त होते हैं। जब बच्चा जन्म लेता है तो जाति अर्थात् मनुष्य जाति निश्चित होती है। बच्चे के स्वास्थ्य के आधार उसकी आयु तथा पैतृक सम्पत्ति के रूप में मिलने वाला धन निश्चित होता है। परन्तु वह जन्म के समय मिली आयु तथा धन को वर्तमान जन्म के कर्मो से बढ़ा भी सकता है और घटा भी सकता है।

(३) क्रियमाण कर्म - वर्तमान में जा कर्म किये जा रहे हैं वे क्रियमाण कर्म है। ये प्रारब्ध से प्राप्त जाति, आयु तथा भोग को प्रभावित करते हैं।

(२४) वैदिक विज्ञान कर्म-फल सिद्धान्त को मान्यता देता है। ''अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म, शुभं व अशुभम्। लेकिन किसी कर्म का फल कब मिलेगा, किस रूप में मिलेगा यह एक गहन विषय है जैसा की गीता में कहा है - गहना कर्मणा गति। फिर भी कर्म-फल के बारे में कुछ बातें कही जा सकती है।

(१) कर्म अपने समय पर ही फलीभूत होते हैं। अधिकतर कर्मो के फलीभूत होने के समय को व्यक्ति जानता है। आग पर हाथ रखने का फल तुरन्त मिल जाता है। पानी पीने से तुरन्त प्यास बुझती है। फसल कितने दिन में पकेगी ?यह वृक्ष कितने दिन में फल देगा। ?आदि बातों को सामान्य व्यक्ति भी जानता है। लेकिन ये तब है यदि कोई आकस्मिक घटना न घटे।

आकस्मिक घटना मृत्यु का कारण भी हो सकती है। इस विषय में व्यक्ति पूर्व अनुमान नहीं लगा सकता।

(२) तीव्र पाप-पुण्य शीघ्र फलीभूत होते है तथा मन्द पाप-पुण्य के फलीभूत होने में अधिक समय लगता है।

(३) कुछ विद्वानों की धारणा है कि बिना कर्म किये भी फल भोगना पड़ता है। ये धारणा वैदिक विज्ञान के विपरीत है। वे कुछ उदाहरण देते हैं।

(अ) एक भूकम्प में हजारों व्यक्ति मारे गये।

(ब) वह व्यक्ति बस दुर्घटना में मारा गया।

(स) वह व्यक्ति गलत आचरण के कारण जेल में है उसका पूरा परिवार दुःख भोग रहा है। इस प्रकार के अनेक उदाहरण हो सकते हैं।

निराकरण - (अ) जो व्यक्ति भूकम्प में मारे गये वे अपने कर्मफलों के वशीभूत होकर ही वहाँ ठहरे हुए थे।

शेष पृष्ठ.....७

गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में दयानन्द की हार

अनुसन्धात्री - स्नातिका सुनीता आर्या
आर्य कन्या गुरूकुल, शिवगज्ज, सिरोही (राज.)

साप्ताहिक आर्यमित्र १५ सितम्बर, २०१५ के अंक में आर्यो का तुष्टीकरण दयानन्द की हार शीर्षक से आचार्या सूर्या देवी चतुर्वेदा का लेख पढ़ा। आचार्या जी ने अपने लेख में जिस घटना का उल्लेख किया है, उसकी मैं प्रत्यक्षदर्शी हूँ। यह घटना गत १५ मार्च २०१५ को हुई।

स्वामी नारायण मत के भद्रेश साधु जिन्होंने गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार में हो रही त्रिदिवसीय राष्ट्रीयसंगोष्ठी १५/०३/१५ के समापन के अवसर पर अपने सामने से नारी वर्ग को हटाने का आदेश दिया और उसका गोष्ठी के अधिकारियों ने पालन किया, उनका जो सहयोग किया, उससे मैं भी बहुत खिन्न हुई। गुरूकुल कागड़ी विश्वविद्यालय परिसर में यह कार्य अतिनिन्दनीय और लज्जास्पद हुआ।

आचार्य जी ने आर्यो को अपने सिद्धान्तों पर सिंहावलोकन करने का लेख के माध्यम से जो दिशा निर्देश किया है, इसके लिए मैं आचार्या जी के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ, बहुमान के साथ धन्यवाद देती हूँ। सूर्या देवी चतुर्वेदी ने बड़ी निर्भीकता से आर्यो के तुष्टीकरण का दोष सामने रखा है, इस तुष्टीकरण की नीति पर गम्भीर चिन्तन आवश्यक है। भद्रेश साधु के कहने से आर्यो ने वहाँ बैठी हुई हम बहिनों को उठाकर जो अपमान किया, इसके उत्तरदायी वहाँ के अधिकारी एवं उपस्थित विद्वज्जन भी हैं। उन्होंने यह अन्यायपूर्ण कार्य होने कैसे दिया ?मुझे तो अति आश्चर्य है।

महर्षि दयानन्द द्वारा स्थापित आर्यसमाज ही एक संस्था है, जो नारी जाति के मान सम्मान के अधिकारी को सुरक्षित रखती है। यदि आर्य जन ही भद्रेश साधु जैसे लोगों के समक्ष अपने सिद्धान्तों को भूल जायेंगे, तो निश्चय ही आर्यसमाज के सिद्धान्त, वेद के उपदेश अवमानना को प्राप्त होगें। आर्य जन स्मरण रखें। ऐसे कार्य दयानन्द की हत्या है, हार है।

आर्यो को दिशा निर्देश करने वाले आचार्या जी के इस लेख को पढ़कर अलीगढ़ निवासिनी प्रतिभा भारद्वाज वसिष्ठ को भी लिखने का साहस आ गया। स्त्री पुरुष के समान या महान् शीर्षक से उनका लेख आर्यमित्र २७ अक्टूबर २०१५ पृ० ५ पर प्रकाशित हुआ है। जो स्त्री जाति के महत्व में लिखा गया है, उसे मैंने पढ़ा।

श्रीमती वसिष्ठ का यह लेख एक सामान्य दृष्टिकोण एवं उपदेशकों के स्त्री विषयक भाषणों की अनुकृति वाला ही है। यद्यपि प्रतिभा जी का लेख नारी जाति के महत्व को दर्शा रहा है तथापि आचार्या जी के लेख की पृष्ठभूमि का पोषक नहीं कहा जा सकता। श्रीमती प्रतिभा ने अपने इस लेख में आचार्या सूर्या देवी चतुर्वेदा ..... ने विस्तार पूर्वक मंत्र संदर्भ देते हुए स्त्री एवं पुमान् को समान बताया है ऐसा उन्होंने संकोच वश ही किया होगा, ये जो पंक्तियाँ लिखी है वे उनका अहं प्रकट कर रही हैं। यदि किसी की उदारता से प्रशंसा न कर सकें, कोई बात नहीं, पर किसी के कार्य को छोटा बनाना कदापि ठीक नहीं।

प्रतिभा जी की ये पंक्तियाँ अनुचित हैं क्योंकि सूर्या देवी चुतर्वेदा ने आर्यो का तुष्टीकरण दयानन्द की हार लेख समान या महान् की चर्चा में नहीं लिखा, अपितु अधिकारों के अन्यायपूर्ण व्यवहार के प्रसंग में लिखा है।

आचार्या जी ने स्त्री पुरुष से महान है ऐसा कथन किसी संकोच के कारण नहीं किया, अपितु प्रसंग न होने से नहीं किया। वे प्रखर शास्त्रार्थी हैं, प्रसंगतः जो उचित था वह लिखा है, प्रसंग रहित बात कहनी अनुचित होती है। आचार्या जी के साहस, प्रखरता, क्षमता व वैदुष्य का सम्भवतः प्रतिभा जी को अनुमान नहीं है। प्रतिभा जी को ज्ञान होवे, जब समानता होती है तब महत्ता (महानता) देखी जाती है, महानता समानता का परिणाम है। जब तक समानता नहीं होगी, तब तक महानता का प्रसंग ही नहीं बनेगा। प्रतिभा जी ने महिला शब्द की जो व्याख्या की है वह भी एकांगी है। महिला शब्द जैसे स्त्री जाति के महत्त्व को बताता है, वैसे ही महिलः शब्द भी बनता है, जो पुमान्गत महत्त्व को स्पष्ट करता है।

मैं स्पष्टतः कहना चाहती हूँ कि प्रतिभा जी आचार्या जी के लेख के उद्देश्य को नही समझ पायी, अतः उन्होंने आचार्या जी के प्रति ऐसा लिखा। आचार्या जी ने आर्यो के तुष्टीकरण की नीति एवं नारी वर्ग के प्रति किये गये अनुचित अन्यायपूर्ण असामाजिक व्यवहार के विरोध में लेख लिखा है। क्योंकि सभा में समक्ष बैठने का समान अधिकार होने पर भी बहिनों को उठाने का जो अभद्र व्यवहार हुआ वह कदापि सहन नहीं किया जा सकता।

प्रतिभा जी को स्त्री विषयक जो कुछ भी लिखना था, स्वतन्त्र लिखतीं। उन्होंने आचार्या जी के प्रति उपर्युक्त पंक्तियाँ लिखकर आचार्या जी के उद्देश्य और आत्मा को ही नष्ट करने की चेष्टा कर दी, यह अच्छा नहीं हुआ। अस्तु।

अन्त में पुनः आर्यो के दिशा निर्देश के लिए आचार्या जी का धन्यवाद करती हूँ।

पृष्ठ.....६ का शेष

(ब) अपने कर्मफलों के वशीभूत होकर ही वह व्यक्ति उस बस में बैठा था जिसकी दुर्घटना हुई।
(स) अपने कर्मफलों के वशीभूत होकर ही उस परिवार के सदस्यों ने उस गलत आचरणा वाले व्यक्ति के घर जन्म लिया था।

हमारे द्वारा किये गये कर्म अनेक रूपों में अनेक बार फलीभूत होते हे।

(२५) योगदर्शन के अनुसार कर्म चार प्रकार के होते हैं - (१) पुण्य कर्म (२) पापकर्म (३) पुण्य-पाप मिश्रित (४) पुण्य-पाप रहित।

पुण्य-पाप मिश्रित वे कर्म है जिनमें एक एक का भला तथा दूसरे का बुरा होता तथा पुण्य-पाप रहित उस व्यक्ति के कर्म होते जिनका मोक्ष प्राप्त करना निश्चित हो जाता है। वह केवल प्रारब्ध कर्मो को भोगता है तथा उसके संचित कर्म (जिनका फल अगले जन्मों में मिलता है) अगला जन्म न मिलने के कारण निष्प्रभावी हो जाते है। इन्हीं के बारे में गीता में कहा है -

''ज्ञान अग्नि दग्ध कर्माणा, तमाहु पडित बुधा।

प्रेषक - कृपाल सिंह वर्मा
२५३, शिव लोक, शंकर खेड़ा
मेरठ

पृष्ठ.....२ का शेष

मनुष्य और किन्हीं को भिन्न-भिन्न प्राणी योनियों में उत्पन्न करता है, इसका आधार जीवों के सृष्टि के पूर्व कल्पों वा पूर्वजन्मों के कर्म वा उन कर्मो का संचय रूपी प्रारब्ध होता है। यह उत्तर वैदिक दार्शनिकों ने सृष्टि विषयक तथ्यों का सूक्ष्म विवेचन करने पर पाया है। इस प्रकार से ईश्वर पक्षपात रहित न्यायकारी सत्ता सिद्ध होती है। ईश्वर के सर्वव्यापक व सर्वान्तर्यामी होने से वह सृष्टि के सभी जीवों का सभी कालों में साक्षी होता है। उसे हर जीव के हर कर्म का यथावत् अर्थात् मन व आत्मा के आन्तरिक भावों से लेकर कर्म का निर्णय करने से कर्म को करने तक का ठीक-ठीक ज्ञान रहता है, अतः उसे जीवों के कर्मो का फल देने में किसी प्रकार की समस्या व कठिनाई नहीं होती।

संसार में एक नियम काम कर रहा है कि हम जो भी कर्म करते हैं उनमें से कुछ क्रियमाण कर्मो का फल हमें साथ-साथ व कुछ का कालान्तर में मिलता है। जीवन के अन्त अर्थात् मृत्यु से पूर्व कर्म जिन्हें क्रियमाण कर्म कहा जाता है, उनका फल साथ-साथ मिल जाता है और अवशिष्ट संचित कर्मो का फल मृत्यु तक नहीं मिलता। इससे यह ज्ञात होता है कि कर्मो का फल वर्तमान व भविष्य दोनों कालों में सुख व दुःख के रूप में मिलता है। इससे यह भी सिद्ध है कि हमारा वर्तमान का सुख व दुख हमारे कुछ वर्तमान और कुछ पूर्व समय अर्थात् भूतकाल में किये हुए कर्मो पर आधारित है। मृत्यु के समय जिन शुभ व अशुभ कर्मो का फल भोगने से रह जाता है, प्रारब्ध नामी कर्म कहलाते हैं, यह प्रारब्ध ही भावी जन्म अर्थात् पुनर्जन्म का आधार है। मनुष्य के जैसे कर्म व प्रारब्ध होंगे, उसी के अनुसार नये जन्म में जाति, आयु और भोग प्राप्त होंगे। योगदर्शन की यह बात तर्क एवं युक्ति संगत है। वेदों व स्मृतियों आदि के आधार पर मनुष्यों को सन्ध्या व दैनिक अग्निहोत्र यज्ञ सहित पितृयज्ञ, अतिथियज्ञ तथा बलिवैश्वदेवयज्ञ करने का विधान है। इन्हें करने से हमारा वर्तमान जीवन और भावी जीवन सुधरता व संवरता है। वेद ईश्वरीय ज्ञान है। सृष्टि के आरम्भ से लेकर महाभारत काल तक और उसके बाद भी विद्वानों द्वारा वेद मार्ग पर ही चलने का निर्देश दिया गया है। हमारे पूर्वज ज्ञान विज्ञान से पूर्ण सत्य का आचरण करने वाले थे, अतः उनकी युक्ति व तर्क संगत बातों को सभी मनुष्यों को मानना चाहिये। शंकालु बन्धुओं को वेद, दर्शन, उपनिषद, मनुस्मृति व सत्यार्थप्रकाश आदि ग्रन्थों का अध्ययन कर अपनी भ्रान्तियां दूर करनी चाहिये। संसार के अन्य ग्रन्थों का अध्ययन कर इस विषय का ज्ञान व समाधान नहीं होता। सभी कर्मो का फल ईश्वर देता है। किस कर्म का क्या फल होता है, यह ईश्वर को ज्ञात है जो कि उसकी व्यवस्था से हमें व सभी जीवों व प्राणियों को अवश्य मिलेगा। हमें ईश्वर के पक्षपात रहित व न्यायकारी होने में पूरा विश्वास रखते हुए बुरे कर्म नहीं करने चाहिये और अपने सभी अच्छे कर्मो को ईश्वर को समर्पित कर निश्चित होना चाहिये। इसका परिणाम शुभ होगा।

यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय के दूसरे मंत्र में मनुष्यों को वेदविहित कर्मो को करते हुए सौ वर्ष जीने की कामना करने की शिक्षा दी गई है। वेद विहित कर्मो को करने से मनुष्य अशुभ व पाप कर्मो के करने से बच जाता है। जिसका परिणाम दुःखों से मुक्ति व सुखों में वृद्धि होता है। वेद विहित कर्म न केवल सुखों की वृद्धि वा दुःखों की निवृति का आधार हैं वहीं इनसे मोक्ष की प्राप्ति भी होती है। अतः सद्कर्मो को करने के साथ सभी मनुष्यों को इनका प्रचार करने का प्रयत्न भी करना चाहिये।

- मनमोहन कुमार आर्य

शोक संवेदना शान्तियज्ञ

गुरूकुल महाविद्यालय पूठ पो. बहादुरगढ़, गढ़मुक्तेश्वर जिला-हापुड़ में जैसे ही सूचना प्राप्त हुई कि हमारे प्रेरणाश्रोत आचार्य बलदेव जी का देहावसान हो गया है। तभी पवित्र यज्ञशाला में शान्तियज्ञ सम्पन्न किया। बाद में स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती ने आचार्य जी के जीवन के विषय में अपने संस्मरण सुनाये और हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित की। गुरूकुल परिवार शोकाकुल हो गया। हम सभी कुलवासी दिवंगतात्मा के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए परमपिता परमात्मा से धैर्य की प्रार्थना करते हैं हम सभी को इसको सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

-राजीव कुमार आर्य,
प्राचार्य

पंजी०सं० आर.एन.आई.-२४४१/५७ - आर्यमित्र ०२ फरवरी, २०१६ पोस्टल रजि.जी.पी.ओ. लखनऊ/एन.पी.-१४-२०१३-१५

एक प्रति ₹ २.००

आर्य मित्र

नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूर./फैक्स:०५२२-२२८६३२८
प्रधान-०९४१२६७८५७१, मंत्री-०९८३७४०२१६२, सम्पादक-९५३२७४६६००
ई.मेल-apsabhaup86@gmail.com

सेवा में,

.....

.....

.....

आर्य प्रतिनिधि सभा के साधारण अधिवेशन के कतिपय चित्र

श्री हरपाल सिंह सहारनपुर का स्वागत

श्री हरपाल सिंह सहारनपुर का स्वास्थ्य लाभ पर आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के साधारण अधिवेशन में दिनांक 31.1.2016 को उनके दीर्घकालिक अस्वस्थता के बाद स्वास्थ्य लाभ होने पर सभा मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती ने माल्यार्पण कर भव्य स्वागत किया। और सदैव स्वस्थ रहने की प्रभु से प्रार्थना की।

पृष्ठ.....१ का शेष

मुरारी अलीगंज एटा, डॉ. विनय प्राणाचार्य गोरखपुर, श्री विजय पाल सरन सम्भल, श्री दीपेन्द्र बहजोई, प्रणव मिश्र बदायूँ, श्री रमेश चन्द्र आर्य मुरादाबाद विजय प्रताप पटेल कुसीनगर, डॉ. सर्वेश औरैया सुरेन्द्र बहादुर इटावा, श्री जयप्रकाश पटवा श्रावस्ती, हरनाम सिंह बरेली, हरपाल सिंह आर्य सहारनपुर, विमल आर्य फैजाबाद, राज करन अभिमन्यु आर्य अम्बेदकर नगर, डॉ. विजयपाल सिंह एडवोकेट अलीगढ़ श्री सुरेश गुप्त हाथरस, श्री कपिलदेव सोनभद्र, श्री अजय श्रीवास्तव कौशाम्बी, श्री अजय पाण्डेय कौशाम्बी, श्री प्रकाश आर्य चौरीचौरा, श्री मुरलीधर भारती बस्ती, रामफेर शास्त्री भदोही, लवकुश शास्त्री कानपुर देहात, डॉ आनन्द बरनवाल, नेता जी ओम प्रकाश कानपुर, संजय कुमार मदेशिया महराजगंज आदि सहित प्रदेश से पधारे प्रतिनिधियों ने आचार्य जी के राष्ट्र के लिए समर्पित जीवन, गुरूकुलीय शिक्षा के लिए प्रचार में सतत संलग्न समर्पित निर्भीक सरल सिद्धान्त निष्ठ जीवन दर्शन पर प्रकाश डालकर शोक सम्वेदना तथा श्रद्धांजलि अर्पित की गयी तथा 2 मिनट का मौन रखकर दिवंगतात्मा की सद्गति एवं सम्पूर्ण दुखित आर्य जगत को मनः शान्ति प्रदान करने तथा उनके आर्य समाज के सिद्धान्तों के प्रचार प्रसार में सतत रह कर उनके अधूरे सपनों को पूर्ण करने का संकल्प लिया गया।

आचार्यजी के असामयिक निधन की सूचना सारे आर्य जगत में दिनांक 28.1.2016 को बिजली की भांति फैल गयी। आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान-श्री देवेन्द्रपाल वर्मा, मंत्री-स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती ने अपने सारे कार्यक्रम स्थगित करके दयानन्द मठ रोहतक रवाना हो गये। दि. 29.1.2016 को उनकी शवयात्रा में लाखों की संख्या में आर्य नर-नारियों ने भाग लिया। आर्य विद्वानों द्वारा पूर्ण वैदिक विधि से अन्त्येष्टि संस्कार सम्पन्न कराया। जिस दृश्य को देखते हुये साराजन समुदाय भाव विभोर हो रहा था।

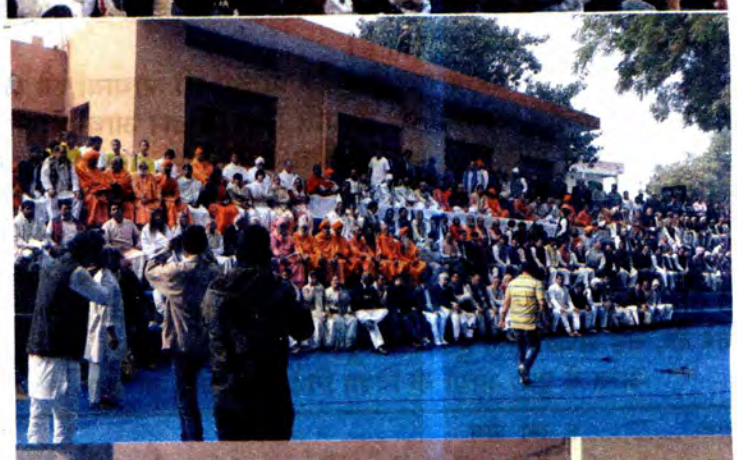

स्वामी–आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक–आचार्य वेदव्रत अवस्थी, मुद्रक प्रकाशक–श्री सियाराम वर्मा, भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस, 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शुभम् आफ्सेट प्रिंटर्स, कैसरबाग, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित

लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है–सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।